महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425

डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 1 अंक - 21 | मुंबई, 1 दिसंबर से 15 दिसंबर 2013 | मुल्य-2/- रुपए | पृष्ठ -8

'दाल के साथ सब्जी खाने से बढ़ी महंगाई'

सिब्बल ने गरीबों का उड़ाया मजाक

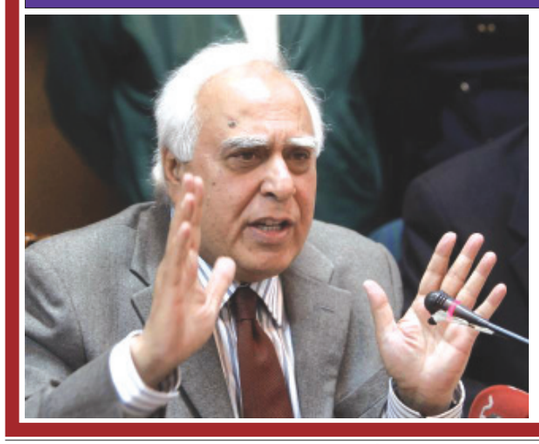

नई दिल्ली। जहां एक ओर देश की जनता बढ़ती सब्जियों की कीमतों से त्रस्त है, वहीं सरकार लोगों के जले पर नमक छिड़कने का काम करने लगी है। कांग्रेस सरकार अपनी मुसीबतें कम करने की जगह बढ़ाती जा रही है। देश के कानून मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कपिल सिब्बल ने एक बेतुके बयान में कहा कि गरीब सब्जियां खाने लगा है इसलिए महंगाई बढ़ गई है।

ग्वालियर में कपिल सिब्बल ने बढ़ती महंगाई के सवाल पर संवाददाताओं से कहा कि देश के गरीब अब दाल के साथ सब्जी भी खाने लगे हैं जिससे महंगाई बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि पहले गरीब वर्ग दाल रोटी खाता था और अब उसके साथ सब्जी भी खाने लगा है। इससे एक तरफ मांग बढ़ी है और उत्पादन में कमी आई है। इस कारण ही महंगाई बढ़ी है।

नासिक मे किसानो का मेला

नासिक मे 15 नव को आरम्भ होने वाला किसानो का मेला 19 नव को सफलता पूर्वक समाप्त हुआ महाराष्ट्र के कृषि मंत्री राधाकृष्ण विखे पाटिल ने किसानो के मेले के महत्व के बारे मे बताया उन्होने कहा यहाँ कृषक सम्रद्धशाली है! महाराष्ट्र एक कृषि प्रधान राज्य है इसलिए ऐसे मेलो का महत्व बड़ जाता है साथ ही पर्यटन मंत्री छगन भुजबल ने अपनी उपस्तिथि दर्ज करा आयोजक व किसानो का उत्साहवर्धन् किया राजस्व मंत्री बाला साहेब थोराट ने भी उपस्तिथि दर्ज कराई

मेले मे किसानो की भारी उपस्तिथी , किसानो की जागरुकता बता रही थी !कि वह बाज़ार मे आने वाले नए उत्पाद व नयी तकनीक को लेकर कितने उत्साहित है दूसरी ओर उत्पाद कंपनियो ने बढ़चढ कर हिस्सा लिया कृषि मेले के आयोजक नितिन ने सृष्टि एग्रो के संवादाता को बताया कि सबसे उत्साह की बात यह है कि इस बार मेले मे युवाओं की बड़ी तादाद मे भागीदारी ने हमे बहुत उत्साहित किया है भविष्य मे भी हम ऐसे मेले आयोजित करते रहेंगे

खुला महिलाओं का अपना बैंक

मुंबई। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने देश के पहले महिला बैंक की शुरुआत कर दी। मुंबई, लखनऊ समेत सात शहरों में भारतीय महिला बैंक की शाखाओं ने मंगलवार से कामकाज शुरू कर दिया। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और यूपीए अध्यक्ष सोनिया गांधी ने देश की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के 96वें जन्म दिवस के मौके पर मुंबई में इसका औपचारिक उद्घाटन किया। वैसे, इस बैंक में पुरुष भी खाता खुलवा सकेंगे मगर कर्ज वितरण सहित सभी सुविधाओं और योजनाओं में महिलाओं को ही प्राथमिकता दी जाएगी। 'महिला सशक्तिकरण, भारत का सशक्तिकरण' पंच लाइन के साथ शुरू हुआ बीएमबी न सिर्फ शहरी क्षेत्र में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देगा, बल्कि समाज के कमजोर वर्ग की महिलाओं को कम ब्याज दर पर कर्ज देकर उन्हें आर्थिक रूप से स्वाबलंबी बनाने पर ध्यान देगा। इस सरकारी बैंक की खासियत यह भी है कि इसके आठ सदस्यीय निदेशक मंडल में महिलाओं को ही जगह दी गई है। वित्त मंत्री पी चिदंबरम के मुताबिक यह पहला सरकारी बैंक है जिसके बोर्ड में सिर्फ महिलाएं होंगी। कर्मचारियों में भी 70 फीसद महिलाएं ही होंगी। चिदंबरम ने चालू वित्त वर्ष का बजट पेश करते हुए महिला बैंक शुरू करने की घोषणा की थी। इसका पूंजी आधार 1,000 करोड़ रुपये का रखा गया है। अगले साल मार्च तक बैंक के शाखाओं की संख्या बढ़कर 25 कर दी जाएगी।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस मौके पर कहा कि इससे महिला सशक्तिकरण के अलावा उनके सामाजिक विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। बीएमबी की लखनऊ शाखा के ब्रांच मैनेजर उत्तम नेगी के मुताबिक इसमें महिला व पुरुष दोनों ही खाताधारी होंगे, लेकिन बैंक से सभी तरह के लोन लेने की सुविधा सिर्फ महिलाओं को मिलेगी। इसके अलावा उन्हें खासतौर पर फिक्सड डिपॉजिट व लोन स्कीम उपलब्ध कराई जाएंगी।

स्वाभिमानी किसान संगठन ने निकाली बाइक रैली

पुणे. कोल्हापुर स्थित वारणा सहकारी शक्कर कारखाने में पेराई शुरू किए जाने के विरोध में शुक्रवार को स्वाभिमानी किसान संगठन ने वडगांव से वारणानगर तक बाइक रैली निकाली। वहीं दूसरी तरफ कार्यकर्ताओं ने कारखाने में गन्ने ले जा रहे वाहनों की तोडफ़ोड़ की। गन्ने के भाव को लेकर स्वाभिमानी किसान संगठन द्वारा आंदोलन शुरू किया गया है। मांग पूरी करने के लिए राज्य सरकार को 26 नवंबर तक का समय दिया गया है। वहीं दूसरी तरफ कुछ कारखानों में पेराई शुरू हो गई है। इसे लेकर संगठन में नाराजगी है। विरोध में को स्वाभिमानी किसान संगठन के कार्यकर्ताओं ने बाइक पर रैली निकाली।रैली में सैकड़ों कार्यकर्ता शामिल हुए। साथ ही कार्यकर्ताओं ने वारणा शक्कर कारखाने में गन्ने ले जा रहे वाहनों को नुकसान पहुंचाया। पन्हाला तहसील स्थित दो किसानों के गन्ने से भरे हुए ट्रैक्टर के टायर पंक्चर किए गए। तलसंदे परिसर से आ रहे पांच ट्रैक्टरों की तोडफ़ोड़ की गई। रात के अंधेरा का फायदा उठाकर संगठन के कार्यकर्ताओं ने वाहनों की लाइट फोड़ दी। सातवे परिसर में वाहन का नुकसान करने के साथ ही चालक से भी मारपीट की गई। मजदूरों को भी गन्ने की कटाई करने से रोका जा रहा है।

चीनी के दाम से मिठास हो सकती है कम

नई दिल्ली: स्टेट अडवाइजरी प्राइस (एसएपी) के मुद्दे पर चीनी मिलों की सरकार के साथ अगर तनातनी जारी रही तो चीनी महंगी हो सकती है। इसकी कीमत में 5 से 10 प्रतिशत तक का उछाल आ सकता है। ऐसे में यूपी के मुख्यमंत्री के साथ चीनी मिलों के अधिकारियों की रविवार को होने वाली बैठक काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इंडियन शुगर मिल असोसिएशन का कहना है कि इस मामले को जल्दी से सुलझा लिया जाना चाहिए। यही चीनी मिलों, सरकार, किसानों और आम खरीददार के लिए बेहतर है।

जब से यूपी सरकार ने गन्ने का एसएपी 280 रुपये घोषित किया है, तब से प्रदेश के चीनी मिलों में से 75 प्रतिशत मिलों ने अपना काम बंद करने का ऐलान कर दिया है। चीनी मिलों का कहना है कि वे गन्ने का इतना अधिक एसएपी देने की सिथति में नहीं हैं। वे ज्यादा से ज्यादा 225 रुपये दे सकते है। इधर किसानों का भी कहना है कि जब राज्य सरकार ने एसएपी की घोषणा कर दी है और पूर्व के स्तर को बरकरार रखा है तो वे इससे कम दरों पर गन्ना नहीं बेचेंगे।

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

आवश्यकता है

* प्रत्येक जिले से संवाददाता चाहिए
*जिला स्तर सेल कॉर्डिनेटर चाहिए
* विज्ञापन हेतु असिसटेंट मैनेजर चाहिए.

संपर्क
022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

सब्जियों का महत्व

सर्दियां आते ही खाने का महत्व और बढ़ जाता है साथ ही बड़ता है सब्जियों का महत्व साग-सब्जियों का हमारे दैनिक जीवन में कितना महत्त्व है यह किसी से छुपा नहीं हैं। दरअसल साग-सब्जी भोजन के ऐसे स्रोत है जो न केवल हमारे भोजन का पोषक मूल्य बढ़ाते हैं बल्कि उसको स्वादिष्ट भी बनाते हैं। विशेषज्ञों की मानें तो एक वयस्क व्यक्ति को संतुलित भोजन के लिए प्रतिदिन 85 ग्राम फल और 300 ग्राम साग-सब्जियों का सेवन करना चाहिए। हमारे देश में सब्जियों की औसत उपलब्धता मात्र 120 ग्राम से भी कम है, यानी सब्जी उत्पादन के व्यवसाय में अभी बहुत अवसर हैं। अगर सब्जी सिर्फ अपने परिवार के लिए ही चाहिए हो तो बगीचा के लिए स्थान घर का पिछवाड़ा हो सकता है जिसे आप लोग बाड़ी भी कहते हैं। यह सुविधाजनक स्थान है क्योंकि परिवार के सदस्य खाली समय में साग-सब्जियों पर ध्यान दे सकते हैं तथा रसोईघर व स्नानघर से निकले पानी आसानी से सब्जी की क्यारियों में लगाया जा सकता है। इससे एक तो एकत्रित अनुपयोगी जल का निष्पादन हो सकेगा और दूसरे उससे होने वाले प्रदूषण से भी मुक्ति मिल जाएगी। साथ ही, सीमित क्षेत्र में साग-सब्जी उगाने से घरेलू आवश्यकता की पूर्ति भी हो सकेगी। सबसे अहम् बात यह कि सब्जी उत्पादन में रासायनिक पदार्थों का उपयोग करने की जरूरत भी नहीं होगी। अत: यह एक सुरक्षित पद्धति है तथा उत्पादित साग-सब्जी कीटनाशक दवाइ्यों से भी मुक्त होंगे। चार या पाँच व्यक्ति वाले औसत परिवार के लिए 1/20 एकड़ जमीन पर की गई सब्जी की खेती पर्याप्त हो सकती है। अगर आपने सब्जी को खेती के साथ-साथ अतिरिक्त कमाई के लिए लगाना चाहते हैं तो घर की बाड़ी इसके लिए छोटी रहेगी। सीधे बुआई की जाने वाली सब्जियां जैसे - भिंडी, सोयाबीन एवं लोबिया आदि की बुआई मेड़ या क्यारी बनाकर की जा सकती हैप्याज, पुदीना एवं धनिये आदि को खेत के मेड़ पर उगाया जा सकता है। प्रतिरोपित फसल, जैसे - टमाटर, बैंगन और मिर्ची आदि को एक महीना पूर्व नर्सरी बेड या मटके में उगाया जा सकता है। है। सब्जी के बगीचे का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना है तथा वर्ष भर घरेलू साग-सब्जी की आवश्यकता की पूर्ति करना है। कुछ पद्धतियों को अपना कर यह लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। बगीचे के एक छोर पर बारहमासी पौधों को उगाया जाना चाहिए जिससे इनकी छाया अन्य फसलों पर न पड़े तथा अन्य साग-सब्जी फसलों को पोषण दे सकें।

बगीचे के चारों ओर तथा आने-जाने के रास्ते का उपयोग विभिन्न अल्पावधि हरी साग-सब्जियों जैसे- धनिया, पालक, मेथी, पुदीना आदि उगाने के लिए किया जा सकता है। सहजन की फली, केला, पपीता, कढ़ी पत्ता : उपरोक्त फसल व्यवस्था से यह पता चलता है कि वर्षभर बिना अंतराल के प्रत्येक खेत में कोई न कोई फसल अवश्य उगाई जा सकती है। साथ ही, कुछ खेत में एक साथ दो फसलें (एक लम्बी अवधि वाली और दूसरी कम अवधि वाली) भी उगाई जा सकती है। व्यक्ति पहले अपने परिवार का पोषण करता उसके बाद आवश्यकता से अधिक होने पर उत्पाद को बाजार में बेच देता है या उसके बदले दूसरी सामग्री प्राप्त कर लेता है। कुछ मामले में घरेलू बगीचा आय सृजन का प्राथमिक उद्देश्य बन सकता है। अन्य मामले में, यह आय सृजन उद्देश्य के बजाय पारिवारिक सदस्यों के पोषण लक्ष्य को पूरी करने में मदद करता है। इस तरह, यह आय सृजन और पोषाहार का दोहरा लाभ प्रदान करता है

ऋतु कपिल (कार्यकारी संपादक)

"भूमि के उर्वराशक्ति पर रसायनिक उर्वरकों का प्रभाव"

1अतुल कुमार, 1सोनी कुमारी एवं 2कुन्दन कुमार जायसवाल
1भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
2भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, पूसा (बिहार)

- कहते है, किसी भी काम की शुरूआत उसके आधार से होती है। ठीक उसी तरह फसल का आधार मिट्टी होती है।
- किसान सबसे पहले फसल लगाने के लिए मिट्टी का चयन करता है।
- हमारा देश कृषि प्रधान देश है। कुछ राज्य जो बहुत विकसित है, पर कुछ राज्य ऐसे है, जहाँ गरीबी ज्यादा है, वहाँ किसान रासायनिक उर्वरकों के महंगे दाम होने की वजह से उसका इस्तेमाल नही कर पाते है।
- 70 से 80: किसान ऐसे राज्यों मे जहाँ गरीबी है, जैविक उर्वरकों का इस्तेमाल कर अपना जीवीकोपार्जन कर रहे है।
- सरकार ने कुछ राज्य जैसे झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड को जैविक राज्य की उपाधि प्रदान की है।
- हमारा देश कृषि प्रधान देश है। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से मृदा की भौतिक, रासायनिक और जैविक इन तीनों गुणों मे कमी आ रही है।
- रसायनिक उर्वरक के प्रयोग से मिट्टी की लावणता बढ़ जाती है, अगर यहाँ जैविक खाद का इस्तेमाल करे तो लावणता को कम कर सकते है।
- मिट्टी में जल संचय करने की क्षमता कम हो जाती है।
- मिट्टी की जो वास्तविक संरचना होती है, वो अस्त–व्यस्त हो जाती है।
- रसायनों का प्रयोग जो उर्वरक में किया जा रहा है, उससे प्रदूषण फैल रहा है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव हमारी वनस्पति और जन्तु–जगत पर देखा जा रहा है।
- मिट्टी में जितने भी पोषक तत्व एवं खनिज पदार्थ हैं, जैसे जस्ता, नाईट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाशियम, मैंगनीज, बोरॉन, कैल्शियम इत्यादि इन सबका रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग के कारण मृदा की उर्वराशक्ति का हनन हो रहा है।
- परिणामस्वरूप हम देखते है, कि फसल की पैदावार कम हो जाती है। मिट्टी बंजर हो रही है।
- इन उर्वरकों के इस्तेमाल से फसलों मे भिन्न–भिन्न तरह की बिमारियाँ देखी जा रही है। कुछ रोग जैसे फफॅूदजनित एवं जीवाणुजनित, ये ज्यादा उभरकर सामने आए है।
- ऐसे फसल जिनमें रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल हुआ है, उन्हे खाकर लोग बीमार पड़ जाते है।
- उर्वरक बनाने में जो जहरीले नाईट्रेट का इस्तेमाल होता है, उससे अनेक बीमारी जैसे नीले बच्चों की बीमारी और मीनीमाटा जैसी बीमारी फैलती है।
- ज्यादा कीटनाशकों के इस्तेमाल से मीनीमाटा बीमारी फैल रही है जो कि पारा के वजह से होती है।
- अधिक रसायनिक उर्वरकों के प्रभाव से हमारे वातावरण का संतुलन बिगड़ता जा रहा है जिसकी वजह से किसान का मित्र केंचुआ विलुत्प हो रहा है। केंचुआ मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- मिट्टी में पाये जाने वाले कुछ सुक्ष्म जीव है जैसे एजेटोबैक्टर, फास्फोरस घुलनीय जीवणु, नील हरित शैवाल आदि विलुप्त हो रहे हैं, जो कि प्रकृति में पाये जाने वाले पोषक तत्व को मिट्टी में संग्रहित करते हैं परिणामस्वरूप मिट्टी की उर्वराशिक्त बढ़ाने में मदद करते हैं।
- उदाहरण के तौर पर धान के एक सहिष्णु किस्म संकर धान जिसमे अधिक नेत्रजन के प्रयोग से आभाषीकंड (थ्ंसेम`उनजद्ध बीमारी देखने को मिलती है।

किसान मित्र बीजोपचार : बीजोत्पादन में अहम भूमिका

सोनी कुमारी, अतुल कुमार, ईश्वर सिंह सोलंकी, कुन्दन कमार जायसवाल
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, पूसा (बिहार)

जिस प्रकार प्रकृति में हरियाली का होना बहुत महत्व रखता हैं, ठीक उसी तरह किसान भाइयों के लिए खेती में उन्नत बीज का होना महत्व रखता है। चूकि, एक स्वस्थ बीज ही स्वस्थ पौधे का उचित निर्माण करता है। हमारा देश कृषि प्रधान देश हैं, जिनमें छोटे किसानों की संख्या ज्यादा है। जिनके पास छोटे–छोटे खेत है और प्राय: खेती ही उनके जीवन–यापन का प्रमुख साधन है। आधुनिक समय मे खाधान्न की मांग बढ़ती जा रही है तथा आपूर्ति के संसाधन घट रहे है। जिससे पौद्योगिकी चुनौतीपूर्ण की अपेक्षा ज्यादा जटिल हो गयी है। विज्ञान के नवीन उपकरणों, तकनीकों, तरीकों तथा प्रयोगों से किसानों की स्थिति मे सुधार हुआ है, तथा नवीन तकनीकों के प्रयोग करने से उनकी जीवन शैली में तीव्र बदलाव आये है। इसी को ध्यान में रखते हुए किसान नई–नई तकनीकों का उपयोग करके उत्पादन तथा उत्पादकता को बढ़ा सकते है। इन्ही मे से एक तकनीक बीचोपचार है। जिसको सुनियोजित तरीके से अपनाने से खेती की उत्पादकता बढ़ सकती है।

यह एक सस्ती तथा सरल तकनीक है, जिससे किसान भाई बीज जनित एवं मृदा जनित रोगों से अपनी फसल को खराब होने से बचा सकते हैं। इस तरीके में बीज को बोने से पहले फफूंदनाशी या जीवाणुनाशी या परजीवियों का उपयोग करके उपचारित करते हैं। भारत एक उष्ण कटिबंधीय प्रदेश है। उष्ण प्रदेश होने के कारण यहाँ रोगों एवं कीटों का प्रकोप अधिक होता है, जिससे की उपज को बहुत अधिक नुकसान होता है। उन्नत प्रजातियों के प्रयोग, पर्याप्त उर्वरक देने व सिंचाई के अतिरिक्त यदि पौध संरक्षण के उचित उपाय न किये जाये तो फसल की अधिकतम उपज नही मिल सकती है।

बीजोपचार :

बीजोपचार में प्राय: बीज को खेतों में बोने से पहले अथवा उसके भंडारण से पहले बीजों को बीजजनित या मृदाजनित रोगों से सुरक्षा के लिए भौतिक, रासायनिक, यांत्रिक एवं जैविक नियंत्रक की उचित मात्रा से बीजों को उपचारित किया जाता है। बीजो को उचित रसायन या जैव नियंत्रक की उचित मात्रा में कुछ इस तरह मिलाया जाए, ताकि बीजों के उपर रसायन या जैविक नियंत्रक की सुरक्षात्मक परत चढ़ जाये जो कि बीजो को रोगी कारको से उचित संरक्षण कर स्वस्थ

एवं पुष्ट पौधे का निर्माण कर सके।

बीजोपचार के निम्न उद्येश्य हैं : फसलों के उत्पादन में रोग बहुत हानिकारक होते है। बीज अनेक प्रकार के रोग जनक जैसे कि फफूंद, जीवाणु, विषाणु इत्यादि के वाहक होते हैं। जो खेतों में बुआई के समय या उसके भंडारण के समय फसलों को नुकसान पहुँचाते है। जिससे फसलों की उपज में तो कमी आ ही जाती है, बीज की गुणवत्ता पर भी बुरे प्रभाव पड़ते हैं। कई रोगों के कारक बीज के अन्दर, उसकी सतह पर, या उसके साथ रहकर बीजो को रोगी बीज के क्रम में रख देते है। इसलिए फसल की समुचित पैदावार एवं मुनाफे के लिए निरोग एवं स्वस्थ बीज का चुनाव करना बहुत आवश्यक है। मुलतः ''स्वस्थ बीज ही स्वस्थ पौधे का निर्माण करता है''।

अतः बीजों की बुआई से पहले उचित रसायन या जैविक नियंत्रक की निर्धारित मात्रा से बीचोपचार कर हम एक उन्नत पौधें का निर्माण कर सकते है। इसके साथ–साथ अनके बीजजनित एवं मृदा जनित रोगों से बीजो को बचाकर उन्नत एवं स्वस्थ बीज निर्माण कर किसान भाइयों को खुशहाली का आधार प्रदान कर सकते है।

बीजोपचारित करने के लिए निम्नलिखित विधियाँ है :

1.राईजोबियम कल्चर से बीजोपचार : इस विधि में खरीफ की पाँच मुख्य फसलों (अरहर, उड़द, मूँग, सोयाबीन एवं मूँगफली), तथा रबी की तीन दलहनी फसलें (चना, मसूर तथा मटर) में राईजोबियम कल्चर से बीजोपचारित कर सकते हैं। 100 ग्राम कल्चर आधा एकड़ जमीन में बोये जाने वाले बीजों को उपचारित करने के लिए प्रर्याप्त होता है। इस विधि में आधा लीटर पानी में लगभग 100 ग्राम गुड़ डाल लेते है तथा खूब उबाल लेते है। ठण्डा होने पर एक पैकेट कल्चर डालकर अच्छी तरह मिला लेते है। इस कल्चरयुक्त घोल के साथ बीजों को इस तरह मिलाते है, कि बीजों पर कल्चर की एक परत चढ़ जाए। उपचारित बीजों को छाया में सुखा कर यथाशीघ्र बुआई करते हैं।

2.सूर्यताप द्वारा बीजोपचार : यह विधि गेहूँ, जौ एवं जई जिनमें अनावृत कंडवा रोग लगता है, के नियंत्रण के लिए लाभदायक है। इस विधि में बीज को पानी में कुछ समय (3–4 घंटे) के लिए भिगोते हैं और फिर सूर्यताप में 4 घंटे तक रखते हैं बीज के आंतरिक भाग में रोगजनक का कवकजाल नष्ट हो जाता है। रोगजनक को नष्ट करने के लिए रोगजनक की सुषुप्तावस्था को तोड़ना होता है, जिससे रोगजनक नाजुक अवस्था में आ जाता है, जो कि सूर्य की गर्मी द्वारा नष्ट किया जा सकता है। यह विधि गर्मी के महीने (मई–जून) में कारगर सिद्ध हुई है।

3.भीगा बीजोपचार : इस विधि का उपयोग सब्जियों के बीजो के लिए ज्यादा फायदेमंद होता है। इस विधि में अनुशंसित मात्रा की दवा का पानी में घोल बना कर बीज को कुछ समय के लिए उसमें छोड़ देते हैं, तथा कुछ समय पश्चात् छायादार स्थान में 6–8 घंटे सुखाकर यथाशीघ्र बुआई करते हैं।

4.गर्म जल द्वारा बीजोपचार: यह विधि जीवाणु एवं विषाणुओं की रोकथाम के लिए ज्यादा लाभदायक है। इस विधि में बीज या बीज के रुप में प्रयोग होने वाले पादप भाग जैसे कंद को 52–540ब तापमान पर 15 मिनट तक रखते हैं। जिससे रोगजनक नष्ट हो जाते है, लेकिन बीज अंकुरण पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है।

5.स्लरी बीजोपचार : यह विधि समय की बचत वाली विधि है। इस विधि से बीज बुआई के लिए जल्दी तैयार हो जाते है। इसमे अनुशंसित मात्रा की दवा के साथ थोड़ा पानी मिलाकर पेस्ट बना लेते है। इस पेस्ट को बीज में मिलाकर छाया में सुखा लेते है। सूखे हुए बीजो से यथाशीघ्र बुआई करते हैं। इस विधी द्वारा बीज कम समय में बुआई के लिए जल्दी तैयार हो जाते हैं।

6.सूखा बीजोपचार : इस विधि में बीज को अनुशंसित मात्रा की दवा के साथ सीड ड्रेसिंग ड्रम में डालकर अच्छी तरह हिलाते हैं, जिससे दवा का कुछ भाग प्रत्येक बीज पर चिपक जाए। सीड ड्रेसिंग ड्रम का उपयोग तब करते है, जब बीज की मात्रा ज्यादा होती है। अगर बीज सीमित मात्रा में है तो सीड ड्रेसिंग ड्रम के स्थान पर मट्टी के घड़े का प्रयोग कर सकते हैं। सीड ड्रेसिंग ड्रम या मिट्टी के घड़े में बीज की मात्रा दो तीहाई से ज्यादा नहीं रहनी चाहिए।

7.जीवाणु बीजोपचार : इस विधि मे सुक्ष्म परजीवीनाशी जैसे ट्राइकोड्रमा विरिडी, ट्राइकोड्रमा हारजिएनम, स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस इत्यादि का उपयोग करके बीज को उपचारित करते हैं।

8.पौधा/(बिचड़ा) उपचार : इस विधि द्वारा मुख्यतः धान, टमाटर, बैंगन, गोभी, मिर्च इत्यादि के पौधों को जीवाणु रोगों से बचाया जाता है। इस विधि में रोपाई से पहले पौधों की जड़ों को एंटीवायोटिक (एस्ट्रेप्टोसाईक्लिन) के घोल में डुबो कर उपचारित करते है।

बीज उपचार के लिए अनुशंसा :

क्र0 सं0	फसल/ साग–सब्जियों के नाम	प्रमुख रोग एवं कीट	रसायन/जैवनाशी का नाम	रसायन/जैवनाशी की मात्रा (ग्राम/किलो बीज)
1.	धान	झुलसा/बलास्ट, पत्र लॉक्षण	कारबेंडाजिम	2
		भूरी चित्ती रोग, धड़ सड़न	कैप्टॉन	2
		जीवाणु पर्ण अंगमारी	स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस 0.5% WP	10
		दीमक	क्लोरीपारीफॉस 20 ई0सी0	3 मि0ली0
2.	गेहूँ	अनावृत कंड	कार्बोक्सीन 37.5 प्रतिशत + थीरम 37.5 प्रतिशत	2.5
		अल्टनेरिया पत्र लॉक्षण, अंगमारी हेल्मिंथोस्पोरियम	कारबेंडाजिम	2
		दीमक	क्लोरिपारीफॉस 20 ई0सी0	5 मि0ली0
3.	मक्का	हेल्मिंथेस्पोरियम, शीथ ब्लाइट	थीरम/कैप्टॉन	3
4.	गन्ना	लाल सड़न रोग	कारबेंडाजिम /थीरम	2/3
			ट्राईकोड्रमा विरिडी	6
5.	अरहर, चना, मसूर, मूंग	उकठा रोग	कारबेंडाजिम /थीरम	2/3
		उकठा एवं झुलसा	ट्राईकोड्रमा विरिडी 1% WP	8–10
		दीमक	क्लोरिपारीफॉस 20 ई0सी0	5 मि0ली0
6.	मूंगफली	बीज एवं मिट्टी जनित रोग	कारबेंडाजिम /थीरम	2/3
7.	सरसों	श्वेत कीट्ट	कारबेंडाजिम /थीरम	2/3
8.	तीसी	उकठा रोग	थीरम	3
9.	आलू	मिट्टी एवं कंद जनित रोग	मेंटालैक्सिल + मानकोजेब	2
10.	गोभी	मृदुरोमिल आसिता	कारबेंडाजिम	2
		मिट्टी एवं बीज जनित रोग	ट्राईकोड्रमा विरिडी1% WP	4–5
		जड़ सूत्रकृमि	स्यूडोमोनास फ्लोरिसेंस 0.5% WP	10
11.	बैंगन	जीवाणु मुरझा रोग	स्यूडोमोनास फ्लोरिसेंस 0.5: WP	10
12.	शिमला मिर्च	जड़ सूत्रकृमि	स्यूडोमोनास फ्लोरिसेंस	10
13.	मटर	उकठा रोग	कैप्टॉन/थीरम	3
14.	भिण्डी	उकठा रोग	कैप्टॉन/थीरम	3
15.	गाजर, प्याज, मूली	बीज एवं मिट्टी जनित रोग	कारबेंडाजिम	2
16.	मिर्च	मिट्टी जनित रोग	ट्राईकोड्रमा विरिडी1% WP	4–5
		जैसिड, एफीड, थ्रीप्स	इमिडाक्लोरपिड 70 WS	2 मि0ली0
17.	टमाटर	उकठा	कारबेंडाजिम	2
			स्यूडोमोनास फ्लोरिसेंस 0.5% WP	10

50 तरह का गुलाब और कई रंगों की गुलदाउदी

फूल हैं, जो जयपुराइटस के घरों की शोभा और महक बढ़ाने वाले हैं । राजस्थान एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट दुर्गापुरा ने जयपुराइटस के घर, ऑफिस, पार्टी, गेट दूगेदर या मैरिज की शोभा बढाने का बीड़ा उठाया है । इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डॉ. स्वरूप सिंह और हॉर्टीकल्चर प्रोफेसर आर.एस. मीणा ने बताया कि हमारे इंस्टीट्यूट में कम से कम 50 किस्म के गुलाब है । इनमें फ्लोरीविंडा, हाई ब्रीड टी, मिनिएचरन, गंगा नगरी, इंग्लिश, रेड, डच, डार्क रेड और कश्मीरी जैसे गुलाबों की ढेरों किस्में देखने को मिलेंगी, वही दूसरी और गुलदाउदी में भी वाइट, पिंक, रेड और मिक्स कलर की भरमार है । जयपूराइटस की इसी डिमांड को देखते हुए जयपुर में ऐसा पहली बार होगा जब किसी सरकारी रिसर्च इंस्टीट्यूट में कई तरह के फूलों के 'मदर प्लांट' की भरमार देखने को मिलेगी । जहां अलग तरह के गुलाब जयपुराइटस को उपलब्ध कराने के लिए रिसर्च इंस्टीट्यूट में 'मदर प्लांट टेक्निक' का सहारा लिया जा रहा है । इस टेक्निक में किसी खास किस्म की वैरायटी को तैयार करने के लिए शुद्धता पूर्ण पौधे को लिया

जाता है । इसे हमेशा किसी ऑथेंटिक नर्सरी से खरीदा जाता है । उसके बाद अलग–अलग किस्मों को एक ही स्थान पर लगाते है, उसके बाद इन प्लांट्स का उपयोग अन्य पौधे या नर्सरी तैयार करने के लिए किया जाता है ।

इस लंबी प्रक्रिया के बाद जयपुराइट्स को मदर प्लांट्स से प्राप्त गुलाब, गुलदाउदी के अलावा मैरीगोल्ड, डेहलिया, जीनिया, कोसमोस, पिटुनिया, एरेंथिमस, पोपी, कोचिया और पोरचूलेका जैसे विभिन्न प्रकार के भारतीय फूलों की भरमार है । जो कि एक से डेढ साल बाद जयपुराइट्स को किसी भी मौसम में आसानी से उपलब्ध हो जाएंगें । वहीं तमाम

फूलों को प्राप्त करने के लिए किसी खास मौसम का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं होगी। वहीं जयपुराइटस के लिए अच्छी खबर ये भी है कि घरों को सजाने–संवारने के लिए गुलदाउदी के पलांट्स भी तैयार है । ये इस विंटर सीजन में आपके घरों के टैरेस गार्डन, गैलरी और आंगन की शोभा बढाएंगे ।

सृष्टि एग्रो ने क्षेत्रीय कार्यालयों का शुभारम्भ किया

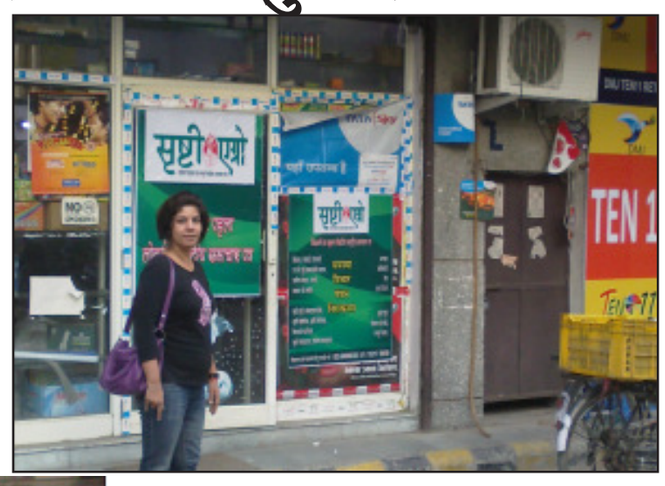

सृष्टि एग्रो ने जयपुर सिटी सेंटर व गुड़गाँव व भायंदर मे अपने क्षेत्रीय कार्यालयों का शुभारम्भ किया जयपुर मे महेन्द्र दधीच ने गुड़गाँव मे दिलबाग सिंह बडेसरा ने व भायंदर मे गौतम राज सारस्वत ने कार्यभार संभाला.

एक सपने की उड़ान.....

पी आई इंडस्ट्रीज

पी आई इंडस्ट्रीज की स्थापना श्री पी पी सिंघल द्वारा 1947 में मेवाड़ आयल एंड जनरल मिल्स लिमिटेड के रूप में झीलों की नगरी राजस्थान के उदयपुर शहर में की गयी यही अपना शोध एवं प्रबंध का केंद्र भी रखा , पी आई इंडस्ट्रीज का कॉर्पोरेट ऑफिस हरियाणा के गुडगाँव में स्थित है ! ! वर्त्तमान में पी आई इंडस्ट्रीज अपनी तीन फार्मूलेशन एवं दो उत्पादन इकाइयों के साथ पांच बहु उत्पादन इकाइयॉ गुजरात स्थित अपने तीन वयवसायिक केन्द्रो द्वारा संचालित करती है ! पी आई इंडस्ट्रीज ग्रामीण इलाको में अपने ब्रांड एवं विस्तृत व विश्वसनीय उत्पाद श्रृंखला के साथ भारतीय किसानो में निरंतर मजबूत पकड़ बनाये हुए है !

घरेलू बाज़ार में अपनी ब्रांड विश्वसनीयता के साथ उच्चतम स्थान बरकरार रखते हुए कंपनी विस्तृत वितरण नेटवर्क , अनूठे डिलीवरी सिस्टम एवं सुदृढ़ मार्केटिंग व उच्च संवाद - संचार प्रणाली अपनाते हुए शानदार प्रदर्शन करती आ रही है ! पी आई इंडस्ट्रीज के विकास एवं विस्तार पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी श्री मयंक सिंघल ने कहा कि 'हम एग्रो अवाड्र्स के अंतर्गत विशुद्ध रासायनिक निर्यात श्रेणी में 'बेस्ट सप्लायर ' का खिताब पाकर बहुत उत्साहित हे हमारी कड़ी मेहनत व बेहतर टीम वर्क ने आज हमे इस मुकाम तक पहुचाया एवं ग्राहको की हमारे उत्पादों के प्रति संतुष्टि हमारे लिए बहुत बड़ी प्रेरणा साबित हुई मेरा ये मानना हे कि पी आई इंडस्ट्रीज हमेशा से ही एग्रो रासायनिक बाज़ार में कड़ी व्यवसायिक स्पर्धा के बावजूद बड़ी मजबूती के साथ खड़ी हे , मुझे पूरा विश्वास हे कि एक दिन पी आई इंडस्ट्रीज लम्बी छलांग लगाते हुए उच्चतम शिखर पर पहुचेंगी' पी आई इंडस्ट्रीज आज भारत की अग्रणी एग्रो केमिकल कम्पनियो में अपना स्थान रखती हे 50 वर्षो से ज्यादा का अनुभव रखते हुए आज लाखों भारतीय किसानों को अपनी उत्पादकता बढ़ाने एवं सुधारने के साथ साथ फसलों को कीटों व अन्य बीमारियों से बचाने के उपायों एवं तौर तरीको द्वारा उन्हें समृद्शाली बनाने में विश्वास रखती है ! सन 1947 में श्री पी पी सिंघल द्वारा स्थापित ये कंपनी आज सर्वश्री सलिल सिंघल , मयंक सिंघल एवं रजनीश सरना सरीखे युवा नेतृत्व के निर्देशन में बेहतर एवं शानदार प्रगति कर रही हे . हाल ही दो दो खिताबों 'बेस्ट सप्लायर एवं बायर्स कंपनी द्वारा बेहतर उत्कृष्टता प्रमाण पत्र' से उत्साहित पी आई इंडस्ट्रीज श्री पी पी सिंघल के सपनो को साकार करते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर है !

ये श्री पी पी सिंघल के सपनो की उड़ान ही तो है

जयदीप माथुर

रास आ रही मंडी मक्का उत्पादकों को

नई दिल्लीः खरीद केंद्रों पर मक्का और धान बेचने की सुविधा दिए जाने के बावजूद मक्का उत्पादक किसान यहां मक्का बेचने में रुचि नहीं दिखा रहे। 58 खरीद केंद्रों में अब तक धान खरीदारी एक दर्जन केंद्रों में हो चुकी है, लेकिन यहां अब भी मक्का आने का इंतजार है। प्रशासन के निर्देश पर मक्के की खरीद की व्यवस्था की गई है, लेकिन अब तक इसकी शुरुआत भी नहीं हुई है। दूसरी ओर कृषि उपज मंडी में 25 जुलाई से लेकर 25 नवंबर तक 4,596 क्विंटल मक्के की खरीद हो चुकी है। मंडी में किसानों को अपनी उपज बेचने में कोई परेशानी नहीं होती, जबकि खरीद केंद्रों पर उनके मन में नियमों के जाल में फंसने की आशंका रहती है। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के विपणन अधिकारी आरबी सिंह कहते हैं कि शासन ने किसानों को राहत देने के लिए इस साल मक्के की कीमत1200-1310 प्रति क्विंटल कर दी है, लेकिन किसान मक्का बेचने नहीं आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस साल अभी तक धान खरीद के लिए 25,258 किसानों ने पंजीयन करवाया है। बढ़ा रकबा और उत्पादन खास बात यह है कि जिले में नकदी फसल के तहत मक्के का रकबा और उत्पादन हर साल बढ़ रहा है। वर्ष 13-14 में 7 ब्लॉक में 5,000 से अधिक किसानों ने 29,882 हेक्टेयर

में मक्के की खेती की थी और उत्पादन 73,000 टन रहा था। पिछले साल ही जिले के किसानों ने खरीद केंद्रों में 8,56,231 क्विंटल धान बेचा था, जिसमें मोटे धान की मात्रा अधिक रही। किसानों की मानें तो मक्के में अधिक फायदा देख व्यापारियों ने अपनी पहुंच बिचौलिए के माध्यम से उनके घर तक बना ली है। बकावंड ब्लॉक के एक किसान के मुताबिक व्यापारी अधिक दाम देने के साथ ही घर से ही माल उठा रहे हैं।

ज्यादा कीमत की आस में कम कपास

नई दिल्लीः पंजाब और हरियाणा में कपास की आवक मौजूदा सत्र में 30 फीसदी तक कम हो गई है। अधिक कीमत की चाह में किसान मंडियों में कपास की आपूर्ति नहीं कर रहे हैं। इस स्थिति से कताई क्षेत्र पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। उत्तर भारत कपास संघ के अध्यक्ष महेश शारदा ने कहा, 'पंजाब और हरियाणा के कपास उत्पादक अधिक कीमतों की चाह में आपूर्ति नहीं कर रहे हैं और उसे अपने पास ही जमा कर रहे हैं। इससे कपास की आवक कम हो गई है।' इन दोनों राज्यों में कपास की कीमत5,000 से 5,200 रुपये प्रति क्विंटल हैं। कारोबारियों का कहना है कि यह पिछले साल की कीमतों के मुकाबले लगभग 30 फीसदी तक कम है। मौजूदा सत्र में कपास का उत्पादन 30 फीसदी कम होकर इन दोनों राज्यों में 6.2 लाख गांठ रह गया है। पिछले साल की समान अवधि में पंजाब और हरियाणा में कपास की आवक 9.25 लाख गांठ थी। जानकारों का कहना है कि कपास किसान, जिन्होंने बासमती चालव की भी खेती की थी, फिलहाल कपास बेचने के मूड में नहीं दिख रहे हैं क्योंकि

उन्हें बासमती की बिक्री से पहले ही ऊंची कीमतें मिल रही हैं। एक जानकार ने कहा, 'कुछ किसानों को बासमती चावल की बिक्री से ऊंची कीमतें प्राप्त हुई हैं। इसे देखते हुए वे कपास की आपूर्ति के प्रति लापरवाही दिखा रहे हैं.

कालीमिर्च की पैदावार में रुचि बढ़ी

नई दिल्ली, काली मिर्च की कीमतें अब तक के सवीच्च स्तर पर पहुंचने के साथ ही अगले साल वियतनाम और भारत में इसकी पैदावार को लेकर दिलचस्पी बढ़ गई है। अगले साल बाजार में काली मिर्च की कीमतें तय करने में यह कारक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आने वाले समय में काली मिर्च की आपूर्ति कम होगी या इसका उत्पादन बढ़ेगा, यह सवाल किसानों, कारोबारियों और निर्यातकों को खासा परेशान कर रहा है। केरल में कटाई शुरू होने के साथ ही वैश्विक फसल सत्र भारत में अगले महीने शुरू हो जाएगा। सबसे पहले केरल के दक्षिणी जिलों, इसके बाद इडुकी क्षेत्र से काली मिर्च की आवक होती है। इसके साथ ही मालाबार क्षेत्र से भी आपूर्ति शुरू हो जाती है। अंत में कर्नाटक से भी आवक शुरू हो जाती है। हालांकि अभी 45,000 टन पैदावार का अनुमान है लेकिन कारोबारियों और किसानों को यह आंकड़ा 35,000 टन ही रहने की उम्मीद है। इडुकी जिले के किसानों के अनुसार अगले सत्र में उत्पादन 40 प्रतिशत तक कम होगा। इडुकी में कुमिली के

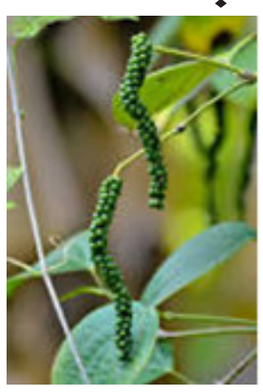

एक किसान ने कहा कि खराब मौसम, रकबे में कमी और केरल के विभिन्न जिलों में पत्तों में बीमारियां लगने के कारण उत्पादन कम रह सकता है।

जैविक कृषि उत्पादों की बिक्री तेज

जैविक कृषि उपजों का घरेलू बाजार देश में तेजी से उभर रहा है। इन उत्पादों की सालाना बिक्री 1500 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। यह जानकारी कृषि व खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्यमंत्री तारिक अनवर ने दी। तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय जैविक खाद्य उत्पाद व्यापार मेला बायो फेक का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले वर्षों से जैविक खाद्य वस्तुओं का घरेलू बाजार तेजी से विकसित हो रहा है। नेशनल सेंटर ऑफ ऑर्गेनिक फार्मिंग (एनसीओएफ) के आकलन के अनुसार घरेलू बाजार का आकार 1500 करोड़ रुपये तक हो गया

है। जैविक कृषि उपजों की घरेलू बिक्री और निर्यात में बढ़ोतरी से पता चलता है कि जैविक वस्तुओं के लिए जागरूकता बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2011-12 के दौरान 300 जैविक खाद्य वस्तुओं का निर्यात किया गया। इनमें प्रोसेस्ड आयटम समेत 19 श्रेणियों की वस्तुएं शामिल थीं। इनमें तिलहन, टेक्सटाइल गारमेंट, चाय, मसाले, शहद, बासमती चावल, कॉफी, सब्जियां, मेवा, चिकित्सकीय पौधे और जैविक कपास शामिल है। वर्ष 2011-12 के दौरान इनका निर्यात 839 करोड़ रुपये का रहा था। ये वस्तुएं यूरोपीय संघ, अमेरिका, जापान, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और अन्य पूर्वी एशियाई देशों को भेजी गईं। वर्ष 2011 के दौरान जैविक चाय निर्यात में भारत दूसरे स्थान पर रहा। जैविक चाय निर्यात में चीन सबसे आगे था। भारत जैविक सोयाबीन में छठा और जैविक चीनी के निर्यात में सातवें स्तर पर रहा।

आगामी माह भी खुलेंगी गेहूं निविदा

नई दिल्ली सरकारी गोदामों से गेहूं बेचने के लिए जारी निविदाओं को मिली तगड़ी प्रतिक्रिया से उत्साहित सरकार जनवरी, फरवरी और मार्च में भी ऐसी निर्यात निविदाएं खोलने की योजना बना रही है। इनके जरिये विदेशी बाजार में करीब 20 लाख टन गेहूं बेचा जाएगा। खाद्य मंत्रालय के अधिकारियों के मुताबिक 2,10,000 टन गेहूं के निर्यात के लिए अगली निविदा 12 दिसंबर को खोली जाएगी। यह गेहूं कांडला, विजाग और पीपावाव बंदरगाहों से निर्यात किया जाएगा। इस सप्ताह की शुरुआत में सरकारी ट्रेडिंग कंपनियों- एसटीसी, एमएमटीसी और

पीईसी को एफसीआई के गोदामों से 3.4 लाख टन गेहूं निर्यात के लिए 284.7 से 289.9 डॉलर प्रति टन की बोली मिली थी। इन तीनों ट्रेडिंग कंपनियों को मिलीं बोलियां एफसीआई द्वारा खरीदे गए गेहूं के निर्यात के लिए सरकार द्वारा तय की गई आधार कीमत 260 डॉलर प्रति टन से ज्यादा है। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने कहा, 'हमने आने वाले महीनों में भी अच्छी कीमत मिलने की उम्मीद है।ऽ डेढ़ लाख टन गेहूं के निर्यात में सफल न रहने पर सरकार को आधार कीमत 300 डॉलर से घटाकर 260 डॉलर प्रति टन करना पड़ी। यह निविदा इसलिए रद्द करनी पड़ी थी, क्योंकि प्राप्त हुई बोलियां आधार कीमत से काफी कम थीं।

चीनी संकटः महाराष्ट्र के किसानों ने लगाई गुहार

नई दिल्ली, सिर्फ उत्तर प्रदेश नहीं महाराष्ट्र में भी चीनी संकट गहराता जा रहा है। मामले को संभालने के लिए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने किसानों के साथ प्रधानमंत्री मुलाकात मनमोहन सिंह के साथ मुलाकात की। महाराष्ट्र के नेताओं ने मनमोहन सिंह के सामने राज्य के किसानों की मांग रखी। महाराष्ट्र के किसानों ने प्रधानमंत्री से चीनी एक्सपोर्ट पर 500 रुपये प्रति क्विंटल सब्सिडी दिए जाने की मांग की है। साथ ही, किसान चाहते हैं कि चीनी इंपोर्ट ड्यूटी 15 फीसदी से बढ़ाकर 40 फीसदी की जाए। इसके अलावा सरकार से चीनी का ६ महीने का बफर स्टॉक बनाने की मांग रखी। किसानों की मांग है कि चीनी मिलों पर बकाए कर्ज काऽ 7 साल में चुकाने की छूट दी जाए। महाराष्ट्र के 170 में 74 मिल अभी भी बंद हैं।

फल, सब्जियां बेचने के लिए शुरू होगा प्लेटफॉर्म

नई दिल्ली, फल और सब्जी किसानों के अपनी उपज बेचने के लिए अब एक प्लेटफॉर्म शुरू होगा, जहां उन्हें अब मिल रही कीमत से बेहतर दाम मिलेंगे और अच्छी किस्म की उपज के लिए और भी अधिक कीमत। यह एक सरकारी कंपनी स्मॉल एग्रीबिजनेस फार्मर्स कंसोटिय्म (एसएफएसी) और एनसीडीईएक्स स्पॉट एक्सचेंज (एनस्पॉट) के संयुक्त प्रयास से संभव हो सकेगा। एसएफएसी ने एनस्पॉट की सदस्यता ली है और यह किसानों की उपज (फल और सब्जियों) को एक्सचेंज के प्लेटफॉर्म पर बेचेगा। इसके लिए एसएफएसी फार्म प्रोड्यूसर्स ऑर्गनाइजेशन (एफपीओ) के अपने नेटवर्क का इस्तेमाल करेगा। एफपीओ की देशभर में पहुंच होगी और यह बतौर संग्रहण केंद्र काम करेगा। किसान अपनी उपज इन केंद्रों पर लाएंगे, जहां इसे ग्रेड दिया जाएगा। एनस्पॉट एक या ज्यादा गुणवत्ता और जांच करने वाली एजेंसियों को चिह्नित कर रही हैं, जो गुणवत्ता को प्रमाणित करेंगी और कीमतें ग्रेड पर आधारित होंगी। एनस्पॉट के प्रमुख राजेश सिन्हा ने कहा, 'किसानों को यह फायदा होगा कि उन्हें एक्सचेंज की पारदर्शी कीमतें मिलेंगी और एफपीओ एक एग्रीगेटर के रूप में काम करेगा, जो किसानों के पक्ष में उपज बेचेगा।' प्रारंभ में यह योजना उन जगहों पर शुरू की जाएगी, जहां सरकार ने भंडारण के लिए बुनियादी ढांचा तैयार कर दिया है। इस व्यवस्था के तहत ग्रेड में बांटी हुई जिंसें एफपीओ द्वारा एक्सचेंज पर लाई जाएंगी और कारोबारी, या संगठित खुदरा श्रृंखलाएं या खाद्य प्रसंस्करणकर्ता खरीदारी करेंगे। जिंसों के बिकने के बाद किसानों को कीमत मिलेगी। एक्सचेंज मार्जिन के आधार पर काम कर रहा है। यह खरीदारों के न खरीदने पर कीमतों में गिरावट और किसानों के न बेचने पर कीमतों में तेजी की स्थिति को संभालेगा। इस व्यवस्था के तहत कारोबार अगले एक या दो तिमाहियों में शुरू होने की संभावना है।

चीनी पर आयात शुल्क बढ़ाने के मूड में नहीं खाद्य मंत्रालय

नई दिल्ली, यूपी में गन्ने का मूल्य घटाने की मांग कर रही मिलों का पेराई से इंकार मौजूदा सीजन में उत्तर प्रदेश की चीनी मिलों की पेराई से इंकार के बावजूद खाद्य मंत्रालय कोई और राहत देने के मूड में नहीं है। खाद्य एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. के. वी. थॉमस ने कहा कि चीनी पर आयात शुल्क बढ़ाने का अभी कोई प्रस्ताव नहीं है। इस समय चीनी पर 15 फीसदी आयात शुल्क है जबकि उद्योग आयात शुल्क को बढ़ाकर 60 फीसदी करने की मांग कर रहा है। सरकार ने बुधवार को चीनी उद्योग को कुछ अन्य रियायतें देने की पहल की थी। थॉमस ने कहा कि उत्तर प्रदेश में मिलों पर गन्ना किसानों की जो बकाया राशि बची हुई है, वह राज्य सरकार का मसला है तथा इससे निपटने में राज्य सरकार उद्योग की सहायता कर सकती है। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार पहले ही उद्योग से लेवी चीनी और रिलीज मेकेनिज्म को समाप्त करके राहत दे चुकी है। चीनी उद्योग का कहना है कि चीनी की कीमतों में पिछले साल की तुलना में भारी कमी आई है जबकि राज्य सरकार ने गन्ने का राज्य समर्थित मूल्य (एसएपी) पिछले साल के बराबर ही तय किया है।

लवणीय एवं क्षारीय मृदाओं का प्रबन्धन

रमेश चन्द्र सांवल' डॉ0 एम. एल रैगर'' डॉ.बी.एस. मिठारवाल''' कुमारी रेखा रैगर''''

लवणीय एवं क्षारीय मृदा प्रायः शुष्क एवं अर्धशुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में पायी जाती है। इस प्रकार की मृदायें विशेष रूप से उत्तरप्रदेश, गुजरात, पश्चिमी बंगाल, राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, हरियाणा, मध्यप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, कर्नाटक आदि राज्यों में पायी जाती है। राजस्थान के लगभग 20 जिलों में लवणीय एवं क्षारीय भूमि की समस्या है। इन मृदाओं में घुलनशील लवणों जैसे सोडियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, एवं पोटेशियम, क्लोराइड, सल्फेट, कार्बोनेट, बाईकार्बोनेट आदि की मात्रा में वृद्धि हो जाती है और इससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

1. लवणीय मृदा :–

जिसमें मृदा के संतृप्त निचोड़ की विधुत चालकता 4 डेसी साइमेन्स प्रति मीटर (केंप्ड) से अधिक, विनिमयशील सोडियम 15 प्रतिशत से कम तथा पी. एच. 8.5 से कम होता है। वह लवणीय मृदाओं की श्रेणी में आती है।

इन मृदाओं में कैल्शियम, मैग्नीशियम, सोडियम, तथा पौटिशियम के घुलनशील लवण मुख्यतः क्लोराइड तथा सल्फेट पाये जाते है, जिससे मिट्टी की सतह पर सफेद या भूरे रंग का बारीक रेह के रूप में पाउडर दिखाई देता है। मिट्टी की ऊपरी सतह सूखने पर खेत में जगह–जगह सफेद चकते (पेच) ऊभर आते है। साधारण भाषा में इन्हें रेह रेहिली व ऊसर भूमि भी कहा जाता है।

2. क्षारीय मृदा :– इन मृदाओं के संतृप्त निचोड़ की विधुत चालकता 4 डेसी साइमेन्स प्रति मीटर से कम विनिमयशील सोडियम 15 प्रतिशत से अधिक, तथा पी.एच. मान 8.5 से अधिक होता है।

इन मृदाओं में सोडियम लवणों की प्रचुर मात्रा होने से विनिमयशील सोडियम की मात्रा भी अधिक होती है। इस कारण ऐसी मृदाओं की भौतिक दशा खराब होती है। जल व वायु का संचार कम होता है, अधोमृदा में कठोर कंकड़ की परत जमा हो जाती है जिससे पानी नीचे नहीं जा पाता है व भूमि चिपचिपी हो जाती है, तथा सूखने पर सीमेन्ट की भांति कठोर हो जाती है। इन्हे काली ऊसर भी कहते है।

3. लवणीय – क्षारीय मृदायें :– इन मृदाओं का पी. एच. मान 8.5 से अधिक मृदा के संतृप्त निचोड़ की विधुत चालकता 4 डेसी साइमेन्स प्रति मीटर से अधिक तथा विनिमयशील सोडियम भी 15 प्रतिशत से अधिक पाया जाता है।

ऐसी मृदाओं में विलेय लवण और विनिमयशील सोडियम दोनों अधिक मात्रा में होते है। मिट्टी के नीचे कैल्शियम कार्बोनेट के कंकरो की अपरागम्य परत होने की वजह से मिट्टी में हवा व पानी का प्रवेश कम हो जाता है। जल निकास कम होने के कारण पानी सतह पर खड़ा रहता है। साधारण भाषा में इन्हें रेह युक्त ऊसर या रेहीली ऊसर कहते हैं।

लवण प्रभावित मृदाओं की पहचान :–

(1) लवणीय मृदा के चाक्षुष लक्षण :–

(1) गर्मियों में लवण की सफेद या सफेद भूरी राख के रंग की तह इन मृदाओं पर दिखाई पड़ती है जो वर्षा होने पर या सिंचाई करने पर विलीन हो जाती है।

(2) कभी–कभी पौधों की पत्तियों का रंग गहरा नीला व किनारे झुलसे हुए दिखाई पड़ते है। तथा पौधों में क्लोरोसिस, ऊतकक्षय एवं विचित्र सुखाव के लक्षण भी दिखाई देते है।

(3) मिट्टी में पर्याप्त नमी होते हुए भी जल की कमी प्रदर्शित करते है और पौधें मुरझा जाते है व वृद्धि कम होती है।

(4) प्राकृतिक वनस्पति कम अथवा टुकड़ों में होती है इन मृदाओं में कुछ ही तरह के पौधे सरलता पूर्वक उगते है।

(ठ) क्षारीय मृदा के चाक्षुष लक्षण :– इन मृदाओं की पहचान लवणीय मृदाओं की अपेक्षा कठिन है। वर्षा ऋतु में जल काफी समय तक सतह पर भरा रहता है। मृदा गीली होने पर चिकनी हो जाती है तथा इसके उपर भरा हुआ जल गुदला रहता है और सुखने पर मृदा में दरारें पड़ जाती है। कभी–कभी कार्बनिक पदार्थ जल में घुलकर मृदा की उपरी सतह को काली बना देता है। कुछ पौधों की पत्तियों का रंग गहरा हरा हो जाता है तथा पौधे झुलसे हुए दिखाई देते है। क्षार ग्रस्त मृदाओं में पौधों की वृद्धि कम होती है और बीजों का अंकुरण प्रभावित होता है।

लवणीय एवं क्षारीय मृदाओं का प्रबन्धन=

इन मृदाओं के सुधारे जाने के पश्चात इनका प्रबन्ध ठीक प्रकार से नही किया जाता है तो वह पुनः लवणीय मृदा में परिणित हो जाती है। इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि इनका प्रबन्ध अच्छी प्रकार से किया जावे ऊसर मृदाओं के प्रबन्ध में वे विशेष यांत्रिक एवं सस्य कियाऐं सम्मिलित होती हैं जो लवणों एवं क्षारों के हानिकारक प्रभावों को कम करने में सहायक है।

1. खेत की तैयारी तथा जुताई की विधिया :– (1) जहाँ तक हो सके खेत को समतल करना चाहिए। समतल खेत में सिंचाई का पानी समुचित रूप से बराबर बट जाता है। खेत समतल न होने पर उसके ऊँचे स्थानों पर पानी नहीं पहुँच पाता तथा वहां लवण लीचिंग द्वारा नीचे नहीं जा पाते। जहाँ भूमि ढालू है वहाँ पर मेढ / बांध बनाने चाहिए।

(2) क्षारीय मृदाओं की भौतिक दशा प्रायः खराब होती है इसलिये गीली अवस्था में जुताई करने पर कीचड़ एवं सूखी अवस्था में ढेले बन जाते है। इन मृदाओं की जुताई उपयुक्त नमी की मात्रा होने पर ही करनी चाहिऐ। भारी मशीनों से जुताई–गुड़ाई नहीं करनी चाहिये। मिट्टी पलटने वाले हल से 15–20 से.मी. गहरी जुताई करने के पश्चात बीज बोया जावे तो अंकुरण अच्छा होता है।

(3) मृदाओं की भौतिक क्यारी की तैयारी तथा रोपण प्रविधि :– ऐसी मृदा में बीजों का अकुरण एक जटिल समस्या है क्योंकि अंकुरण पर लवणों का बुरा प्रभाव पड़ता है। क्यारी का आकार पौधों का रोपण तथा सिचाई की प्रविधि इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे बीज तथा सिंचाई की प्रविधि इस प्रकार की होनी चाहिये जिससे बीज तथा पौधों की जड़ों के आस–पास लवणों की मात्रा कम हो सके। इन मृदाओं में कूड़–सिंचाई वाली फसलों के बीज मेढ़ो के ढलान पर बोना चाहिए और उगने से पूर्व एक सिंचाई देनी चाहिये। इससे लवणों का अंकुरण पर कम असर होता है और पौधा अपने को जल्दी ही स्थापित कर लेता है।

(4) लवणीय मृदा में मेढ़ों की दिशा पूरब से पश्चिम की ओर होनी चाहिये। फसलों को मेढ़ पर उत्तरी ढलान की ओर बोना चाहिये क्योकि इस ढलाने पर लवणों की सांद्रता दक्षिणी ढलान की अपेक्षा कम होती है, अधिक लवणीय मृदा में कूड़ों वाली फसलों को एक कूड छोड़कर दूसरी कूड में बोना चाहिये।

सिंचाई :– सिंचाई प्रविधि पौधों की बढवार में कई प्रकार की वृद्धि कर सकती है। जल मृदा में लवण–सान्द्रता को अधिक तनु रखता है सिंचाई से लवण पौधों से नीचे लीचिंग द्वारा चले जाते है तथा पौधों को जल शोषण में आसानी होती है। यदि पानी अधिक मात्रा में उपलब्ध है तो इन मृदाओं में प्रवाहित सिंचाई का तरीका अधिक लाभ प्रद होता है क्योंकि सिंचाई की इस विधि से विलेय लवण नीचे चले जाते है। इन मृदाओं में सिंचाई जल्दी–जल्दी करनी चाहिये तथा प्रत्येक सिंचाई के समय कम पानी खेत में लगाना चाहिये।

सस्य सम्बन्धी कियाएं :–

(1) लवण प्रतिरोधी फसलों का चुनाव :–

(अ) अंकुरण :– फसलों का चुनाव करते समय बीजों के अंकुरण की सफलता पर ज्यादा जोर देना चाहिये तथा फसल बाद की अवस्थाओं में लवण प्रतिरोधी होनी चाहिये। उदाहरणार्थ चुकुन्दर बाद की अवस्थाओं में अधिक प्रतिरोधी है परन्तु प्रारम्भ की अवस्था में अंकुरण के समय यह लवणों की उपस्थिति को सहन नही कर पाती है।

(ब) लवण सहिष्णु फसल उगाना :– उन लवणीय मृदाओं में जहाँ सुधार का कोई तरीका सफलतापूर्वक नही अपनाया जा सकता, वहाँ पर लवण सहिष्णु फसले उगायी जा सकती है इनको लवण सहिष्णुता के आधार पर तीन वर्गो में बांटा गया है।

तालिका :– लवणों के लिए फसलों की आपेक्षित सहिष्णुता :–

स) बीजों का उपचार :– बीजों को बोने से पहले लवण विलयन में डूबोने से फसलों की लवण प्रतिरोधकता बढ़ जाती है, तथा अंकुरण में वृद्धि होती है।

(द) लवणीय मृदा पर फसल चक्र :– इन मृदाओं में सदैव फसलें उगाना चाहिये, इन्हें पड़ती नही छोड़ना चाहिये। इन मृदाओं को खाली छोड़ने से ये अपनी अवस्था में वापिस आ जाती है इन मृदाओं के लिये उपयुक्त कुछ फसल चक्र निम्न प्रकार से है।

1.धान – जौ – चावल
2.पड़ती सरसों – बाजरा – राई
3.धान – सरसों
4.ढैचा – धान – बरसीम
5.कपास – मक्का – आलू
6.ग्वार – जौ – कपास – मैथी

(य) खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग :– उर्वरकों को उनकी निर्धारित मात्रा से अधिक देकर फसलों पर लवणता का असर कम किया जा सकता है। नत्रजन की अधिक मात्रा (लगभग 25:) से फसल अच्छी होती है। अमोनियम सल्फेट का प्रभाव यूरिया तथा किसान खाद से अच्छा होता है इन मृदाओं में पोटाश तथा फास्फोरस उर्वरकों के प्रयोग से सोडियम क्लोराइड का पौधों द्वारा अवशोषण कम हो जाता है। अकार्बनिक उर्वरकों के साथ कार्बनिक खादों का भी प्रयोग करना चाहिये। अकार्बनिक उर्वरकों की मात्रा एक साथ न देकर कई बार में उचित समय पर देनी चाहिऐ।

रासायनिक सुधारकों का प्रयोग :–

जिप्सम :– इसके उपयोग से जमीन की भौतिक दशा सुधर जाती है तथा इसके रासायनिक व जैविक गुणों में बहुत सुधार आ जाता है जिप्सम मिट्टी में घुलनशील कैल्शियम की मात्रा बढ़ाता है जो क्षारीय गुणों के लिए जिम्मेदार अधिशोषित सोडियम को घोलकर तथा मिट्टी के कणों से हटाकर अपना स्थान बना

लेता है तथा भूमि का पी.एच मान कम कर देता है जिसमें फसलों के लिए आवश्यक तत्वों की उपलब्धता मृदा में बढ़ जाती है। जिप्सम को जमीन में मिलाने से पहले आमतौर पर बारीक पीसकर तथा जमीन पर पाउडर की तरह भूरक कर इसको अच्छी तरह 10–15 सेमी. मिट्टी की सतह में मिला दिया जाता है तथा बाद में सिंचाई कर देते है। जिप्सम का उपयोग मृदा की जांच के आधार पर ही करना चाहिए। भूमि सुधारक के रूप में जिप्सम का प्रयोग केवल खरीफ में करते है। इसके उपयोग से तिलहनी फसलों में तेल की मात्रा व दलहनी फसलों में प्रोटीन की मात्रा में वृद्धि होती है।

जैविक उपाय :– क्षारिय भूमि सुधारने के लिए ढैचा की हरी खाद का उपयोग अत्यन्त लाभ कारी है इससे मिट्टी के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों में सुधार होता है जो कि सोडियम के हानिकारक प्रभाव को कम करता है। ढैचा की फसल को फूल आने पर भूमि में पलट देना चाहिए ताकि यह सड़ जाये और मिट्टी में हवा पानी का संचार अच्छी तरह हो सके। इससे जैविक पदार्थ एवं नाइट्रोजन जमीन में मिलकर पौधों को प्राप्त होगे, मृदा का पी.एच. मान कम होगा तथा सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता बढ़ेगी। हरी खाद के लिए ढैचा के अलावा सनई, ग्वार, चंवला आदि की भी बुवाई की जा सकती है।

चीनी मिल के प्रेसमड के लगभग 12.5 टन प्रतिहेक्टर की दर से जमीन में डालने पर क्षारीय भूमि में सुधार होता है। इसको बुवाई से एक सप्ताह पूर्व सिंचाई के साथ प्रयोग करना चाहिए।

मदिरा / शराब उद्योग से प्राप्त सह उत्पाद स्पेन्टवाश को 5 लाख लीटर प्रतिहेक्टर की दर से अच्छी तरह से जुताई किए हुए खेत में प्रयोग करें। पांच–सात दिन बाद अच्छे गुण वाले पानी से सिंचित करे। सिंचाई का पानी भूमि की सतह पर 10–15 से.मी. 25 घण्टे तक कम से कम भरा रखे, उसके बाद पानी को खेत से निकाल देवें। इसके बाद अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 5 टन प्रतिहेक्टर की दर से खेत में डाले।

रमेश चन्द्र सांवल बध्व सी. एल.मीणा डी–13 शास्त्री नगर बीकानेर। मउंपसरू

फसल में जल उपयोग एवं सिंचाई

राजस्थान में गन्ने को छोड़कर गेहूं ही एक ऐसी फसल है जिसे रबी में सर्वाधिक पानी कि आवश्यकता रहती है। आज भी सरसों के क्षेत्र में चार गुनी वृद्धि हो जाने के बावजूद गेहूं कि फसल ही कृषि कि स्थाई पायदान है। चाहे खाद्यान्न में योगदान के रूप में देखे अथवा आर्थिक दृष्टिकोण से देखे। ग़ेहूं के बिना कृषि कि कल्पना हो नहीं सकती,हाल ही फव्वारा सिंचाई के समावेश से गेहू कि खेती उन क्षेत्रों में भी होने लगी जो समतल नहीं है एवं जहां पहले पानी की पहुँच नहीं थी। इसकी पैदावार में कई महत्वपूर्ण बिन्दु है परन्तु आर्थिक बिन्दु हर समय पर प्रभावी रहता है अर्थात गेहूं कि फसल में प्रति हक्टेयर खर्चा कम आवे एवं उत्पादन अधिक हो यह किसान कि तो आवश्यकता है ही सरकार कि मंशा भी यही होनी चाहिए ईस संधर्भ में पहले उपाय के रूप में बीज पर चर्चा सार्थक है कि एक से डेढ़ क्विंटल ग़ेहूं का बीज प्रति हेक्टेयर कि बजाये 60 से 80 किलो बीज प्रति हेक्टेयर काम में लेकर उतनी ही पौधे संख्या बनाई जा सकती है जीतनी एक से डेढ़ क्विंटल से प्राप्त होती है बशर्त बुआई में कुछ बुवाई चातुर्य जैसे पूरी नमी में बुवाई 2 इंच से अधिक गहरी न हो। कतार से कतार कि दुरी 17 से 18 सेंटीमीटर राखी जावे आदि। इन पर अमल कर लगभग 50 किलो ग़ेहूं प्रति हेक्टेयर बचाया जा सकता है। यदि पुरे राज्य में देखे तो 25 लाख हेक्टेयर में साढ़े बाहर लाख क्विंटल ग़ेहूं के बीज कि बचत हो सकती है इसी तरह पानी का उपयोग भी वैज्ञानिक ढग से किया जाये तो अमूल्य रत्न पानी कि भारी बचत तो होगी ही बिजली एवं धन कि भी बहुत बचत कि जा सकती है। वर्तमान में पानी चाहे जिस फसल में हो या चाहे जिस विधि से हो बिना नाप के दिया जाता है। जब कि अधिक पानी हर हालत में उतना ही नुकसानदायक है जितना काम पानी देना जैसे पूर्ण सूखे से फसल नष्ट हो जाती है वैसे ही पूर्ण भराव से फसल गल जाती है। उपयुक्त मात्रा में कमी या अधिकता अपने अनुपात के हिसाब से पैदावार निर्धारित कराती है। वर्तमान में गेहूं में सिंचाई को ले तो पहला पानी काफी अधिक दिया जाता है यानि तिन -चार इंच या इससे अधिक नहरी क्षेत्र में यह मात्र काफी अधिक रहता है। जब कि पानी कि आवश्यकता मात्र डेढ़ इंच क्री ही होती है। यदि पहली सिंचाई कि गणना करते है तो 25 लाख हेक्टेयर में औसतन दो इंच पानी का उपयोग मन ले जो आवश्यकता से अधिक ही है एवं न्यूनतम मात्र चार इंच जो दी रही है उससे हिसाब लगावे तो 50 लाख हेक्टेयर इंच पानी है अधिक दे रहे है। 50 लाख हेक्टेयर इन्च का साधारण भाषा में 125 लाख (एक अरब 25 करोड़) टन पानी बैठता है। यदि यह भी मन जाये कि भूमि का पानी भूमि में ही रहेगा तो भी इतने पानी को पंप,फव्वारा या अन्य साधनों से उठाने पर कितनी विद्युत एवं डीजल खर्च होता है ,यह गणना का विषय है। यदि तकनीकी विकसित कर इस ऊर्जा कि बचत करे तो बिजली संकट का सामना बेहतर ढंग से किया जा सकता है। हम नहरी सिंचाई व्यवस्था को नहीं गीने तो फव्वारा सिंचाई एवं बिजली कि मोटर एवं इंजिन से सिंचाई में यह अतिमहत्व पुराण है जब कि नहरी पानी के आधिक्य से ही सेम एवं खराडे कि समस्या पैदा होती है फव्वारा सिंचाई में तो बिजली कि बचत दुगनी होती है। यानि पानी निकलने या उठाने पर एवं फव्वारा से प्रेशर पैदा करने पर दोनों में ऊर्जा कि आवश्यकता होती है यह हिसाब तो ग़ेहूं कि फसल में केवल प्रथम सिंचाई का है अन्य सिंचाइयों में भी कमोबेश यही स्थिति है।

ग़ेहूं कि फसल में सिंचाई के व्यवहारिक पहलू को देखे तो पाएंगे कि औसतन गेहू कि फसल को 16 इन्च पानी भी आवश्यकता होती है अपने जीवन कल, में परन्तु जैसे किसी शिशु को भिन्न अवस्थाओं में भोजन पानी कि भिन्न आवश्कयता होती है वैसे ही गेहू में भी होती है। पहली अवस्था नवम्बर-दिसंबर में औसत दोमट मिटटी में 0.13 इन्च पानी प्रति दिन चाहिए होता है अर्थात पलेवा के समय में पहली सिंचाई 20 दिन कि फसल होने पर २.६ इन्च पानी कि आवश्यकता होगी जिसमे पलेवा की सिंचाई शामिल है। दूसरी सिंचाई पहली सिंचाई के 15 दिन बाद करे तो पाली सिंचाई किसी भी हालत में २ इन्च से अधिक आवश्यक नहीं है। दूसरी सिंचाई भी इसी अन्तराल से करे या अगली हर सिंचाई इसी अन्तराल से करे तो दिसंबर तक 0.13 इन्च प्रति दिन के हिसाब से 2 इन्च प्रति सिंचाई पानी की आवश्यकता होगी जनवरी से 0.175 इन्च प्रति दिन के हिसाब से 15 दिन का अन्तराल मान 2.75 इन्च एवं फरवरी में 2.5 इन्च प्रति दिन के हिसाब से3.75 से 4 इन्च पानी की आवश्यकता होगी यह अवस्थाये लगभग सही बैठती है। तापमान एवं किस्म पर थोडा बहुत अंतर हो सकता है। पूर्व में यक माना जाता था की सिंचाई को इस तरह नियंत्रित नहीं किया जा सकता परन्तु यह तकनीक में सुधर कर अवश्य ही किया जा सकता है। अभी हाल में एक सम्मलेन में यह कहा गया है की अगला युद्धापानी के लिए होगा अत : हमें पानी के उपयोग के बारे में विचार कर कार्यवाही तो करनी ही होगी।

गेहू में सिंचाई आवश्कयता की सारिणी

पानी का औसत दैनिक उपयोग 0.13 इंच
मासिक उपयोग दिसंबर- जनवरी 4 इंच
पानी का दैनिक उपयोग फूल आने के समय 0.25 इंच 0.5 इंच,
फरवरी मार्च 7 इंच
कुल पानी का उपयोग 16 सs 17 इंच

फव्वारा सिंचाई पद्धति में फव्वारा से पानी कि वास्तविक मात्र का नियंत्रण सम्भव है जिसे किसान भी अपने स्तर पर कर सकते है उदहारण ,फव्वारा चलाकर धर के बिच में 1 x 1 फुट के आकर का बर्तन रख देवे एव एक घंटे में उसमे कितना पानी आया है उसका नाप ले। उससे अपने फव्वार से कितना पानी प्रति घण्टा निकल रहा है यह पता चल सकेगा एवं दिसमबर जनवरी में 0.13 इंच प्रतिनिधि से गुणा कराके पानी कि मात्र निकल सकते है विस्तार कार्यकर्ता तो यह कार्य थोड़ी से ट्रेनिंग के बाद अवश्य ही कर सकते है जनवरी फरवरी में 0.17 इन्च से गुणा करले तथा फरवरी मार्च में 0.25 इन्च से गुणा कर वास्तविक मात्र निकल कर सिंचाई कर सकते है। यही क्रिया अन्य फसलों में भी अपनाई जा सकती है एक अन्य समस्या आ सकती है कि फव्वारा द्वारा यह मात्रा देने के लिए कितने फव्वारा चलाया जावे ,इसके लिए भी चिकनी मिटटी एवं बालू मिटटी में समय अलग अलग हो सकता है। सारिणी अनुसार समय का निर्धारण किया जा सकता है। चिकनी मिटटी 0.1 इन्च प्रति घण्टा ,सिल्ट लोम 0.5 इन्च प्रति घण्टा रेतीली

सीताराम पारीक,जयपुर

लोम 2 इन्च प्रति घण्टा रेतीली मिटटी 3 इन्च प्रति घण्टा होता है।

यदि विस्तार कार्यकर्ताओं एवं किसानों में यह तकनीक अपनाने कि भावना पैदा कर दी जावे तो निश्चित रूप पैदावार में तो वृद्धि होगी ही। ऊर्जा कि भी भरी बचत होगी। अब वास्तव में समय आ गया है कि विकसित व वैज्ञानिक विधियों का समावेश कृषि में किया जा सके।

एक प्रश्न यह उठ सकता है कि फव्वारा द्वारा सिंचित क्षेत्र में तो यह संभव है अन्य जगहों पर जहा सिंचाई क्यारी बनाकर कि जाती है अथवा नहर से कि जताई है वह क्या हो। अभी लगबग ढाई से 3 लाख हेक्टर क्षेत्र में फव्वार सिंचाई होती है। इसमे तो तुरंत इस प्रयोग भी आवश्यकता है। अन्य जगह बार्डर स्ट्रिप सिंचाई के उपयोग को हर हालत में बढ़ावा देना होगा। नहरी क्षेत्र में तो कानून वारबंदी एवं आउटलेट से नियंत्रण संभव होना ही चाहिए परन्तु अन्य जगह कुओं से सिंचाई वाले क्षेत्रों में भी जमीन के बेहतर लेवलिंग ,फ्लोट लेवलिंग के उपयोग आदि को अवश्य काम में लगाया जाना चाहिए फ्लोट जैसे यंत्रो पर अनुदान कि व्यवस्था का समय भी अब आ गया है।

जैसे सामाजिक स्तर पर एवं आर्थिक स्तर पर किसान बढ़ा है। खेत में पाणत अब खेत में घुसकर हर क्यारी का नका मोड़ने से बदलना होगा। लम्बी पतली क्यारी के बॉर्डर पर ही पाणत कि जा सकेगी। इससे एक तो उपयुक्त मात्र में लग सकेगा जिससे पानी कि भारी बचत होगा बिजली कि बचत होगी। किसान के श्रम क्री बचत होगी एवं पैदावार आशातीत वृद्धि होगी क्योकि इससे सही एवं उपयुक्त पानी लगेगा जिससे पैदावार अधिक होगी ही क्योकि हर मोड़ पर जो पौदे उखड कर मर जाते थे उनकी तो बचत होगी ही जो कि प्रति मीटर क्षेत्र में बालियों कि संख्या में वृद्धि करेंगें।

मुर्गी पालन में कवक जनित रोगों के निवारण के उपाय

राकेष चौधरी और जोधराज जाट'
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कषशि विष्वविघालय, हिंसार (हरियाणा) – 125004
'श्री कर्ण नरेन्द्र कषशि महाविद्यालय जोबनेर, जयपुर (राज0) – 303329

गत तीन दशकों के दौरान अपने देष में कुक्कुट पालन के क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव आये हैं। इस दौरान मुर्गीपालन घर के पिछवाडे से चलकर एक लाभदायक उधोग का

रूप ले चुका हैं। आज मुर्गियों की उत्पादन क्षमता लगभग 310 अंडा प्रतिवर्श तथा छः सप्ताह में ब्रायलरों का षारीरिक भार लगभग 2 कि0ग्रा0 तक पहुंच चुका हैं। इनके परिणाम स्वरूप भारत विश्व में अंडा उत्पादन के क्षेत्र में चौथा तथा ब्रायलर उत्पादन में पांचवां स्थान बना चुका हैं। मुर्गी पालन व्यवसाय पर किये गये कुल व्यय का लगभग 65–75 प्रतिषत भाग उनकी आहार व्यवस्था पर खर्च होता हैं।

कुक्कुट पालकों को अपनी मुगियों से अधिक अंडे व मांस उत्पादन प्राप्त करने के लिये उन्हें सस्ता एवं संतुलित आहार देना अति आवश्यक हो जाता हैं। लेकिन व्यावसायिक कुक्कुट पालन के क्षेत्र में कुछ समस्यायें भी पैदा हो रही हैं जैसे नयी बीमारियों का प्रकोप, सस्ते एवं पौश्टिक खाध पदार्थों की अनुपलब्धता , खाध पदार्थों में फफूंद का संक्रमण इत्यादि। कुक्कुट व्यवसाय में कवक जनित रोग की समस्या केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विष्व में बन चुकी हैं। कवकों की लगभग 300 से ज्यादा प्रजातियां कुक्कुट आहार में मिलाये जाने वाले विभिन्न खाध पदार्थो को सवंमित करने के लिये जिम्मेदार होते हैं। विष्व में फसल उत्पादन का लगभग 25–25 प्रतिषत भाग इन कवकों का सवंमित हो जाता हैं।

ऐसे संक्रमित खाध पदार्थो से बने कुक्कुट आहार या फफूंद सवंमित मिश्रित कुक्कुट आहार मुर्गियों को खिलाने पर मुर्गियों की शारीरिक बढवार घट जाती हैं, अंडे का उत्पादन कम हो जाता हैं, आहार भक्षण में कमी आती हैं तथा आहार रूपांतरण दक्षता प्रभावित होती हैं। अंडे की गुणवत्ता में कमी आती हैं। मुर्गियों में लंगडेपन के लक्षण प्रकट हो सकते हैं तथा शरीर की रोगरोधी क्षमता कम हो जाती हैं। इन विकषतियों के कारण अंडे व मांस उत्पादन पर बुरा असर पडता है। साथ ही साथ मुर्गियों में अस्वस्थता एवं मृत्युदर भी बढ जाती हैं। इसलिये कुक्कुटों में कवकों से होने वाली हानियों तथा उनसे बचाव का ज्ञान बहुपयोगी कुक्कुट पालन के लिये लाभदायक होगा।

कवक जनित रोग क्या हैं

विघटित कार्बनिक अवशषों पर उगने वाले सैप्रोफाइटी कवकों की कई प्रजातियों से अनाज और अन्य खाधों के संक्रमण से अनेक अपघटन के साथ साथ कवकों द्वारा विशाक्त पदार्थ भी उत्पन्न किये जाते हैं, जिन्हें कवक जन्य विश कहते हैं। ऐसा तब होता हैं जब भंडारित खाधों में नमी की मात्रा 12 प्रतिषत से अधिक होती हैं। कवकों से प्रदूशित अनाज में उर्जा तथा प्रोटीन की मात्रा कम हो जाती हैं। इस प्रकार के कवक प्रदूशित खाघ पदार्थों से बना कुक्कुट आहार मुर्गियों को खिलाने पर मुर्गियों में आहार खपत कम होना षरीर बढवार का रूकना, आहार रूपांतरण दक्षता पर प्रतिकूल प्रभाव, अंडे का उत्पादन कम होना, लंगडापन एवं कमजेारी इत्यादि लक्षण देखने को मिलते हैं। इसे हम कवक जनित रोग या माइकोटॉक्सिकोसिस कहते हैं। इसमे मुर्गियां एक या एक से अधिक कवक जनित विश से प्रभावित होती हैं। अफ्लाटाक्सिन, बोमिटाक्सिन, जिरेलीनोन, अकराटाक्सिन, सिट्रीनिन और टी–2 टाक्सिन इत्यादि ऐसे प्रमुख कवक जनित विषय हैं, जिनके कुक्कुट आहार में अकेले या मिश्रित रूप से रहने पर कुक्कुटों के उत्पादन एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर पडता हैं। कवक जनित विश के प्रभाव को सहन करने की शक्ति विभिन्न कुक्कुट प्रजातियों में भिन्न भिन्न होती हैं। बतख तथा टर्की में कवक जनित विश की सहन षक्ति अत्यंत कम होती हैं,। गिनी फाउल, मुगी, एवं बटेर में इस विषय की सहन शक्ति बतख तथा टर्की से जयादा होती हैं।

कवक वर्धन को प्रभावित करने वाले कारक

आहार में कवकों की वृद्दि कई कारणों से होती हैं। इनमें से मश्दा की किस्में, खेती करने की पद्दति, सस्यों की प्रतिरोधी क्षमता, फसल कटाई का समय, जलवायु, वायुमंडलीय तापमान, पक्षी, कीट तथा चूहों का प्रकोप, परिवहन एवं भंडारण की विधि इत्यादि प्रमुख हैं। दाना भंडारण के समय दाने में नमी की मात्रा, ऑक्सीजन की मात्रा, वातावरण की आर्द्रता एवं तापमान से कवकों का विकास बहुत प्रभावित होता हैं। सामान्यतः 80–82 प्रतिशत आर्द्रता एवं 18 डिग्री से 42 डिग्री से0 तापमान, कवक विकास के लिये अनुकूल होता हैं। इसी प्रकार दाने में 12 प्रतिशत या इससे ज्यादा नमी कवक, विकास के लिये अनुकूल पायी जाती हैं। अन्न और उनके उप उत्पाद, तिलहन और खलिया, मूंगफली की खली, कपास के बीज की खली, सूर्यमुखी की खली, सोयाबीन की खली, कसावा चूर्ण, मछली का चूरा एवं तैयार आहार में कवकों का संक्रमण बहुत कम पाया जाता हैं। मुर्गियों को बिछाली पद्वति में पालने पर पानी एवं दाने के बर्तन साफ न होने या नमी वाली जगहों पर आहार का भंडारण करने पर कवकों के संक्रमण की संभावना अधिक रहती हैं।

कवक जनित रोगों का मुर्गी स्वास्थ्य पर प्रभाव

अफलाटॉक्सिन

अफ्लाटॉक्सिन, मुख्यतः एसपरजिलस फ्लेवस तथा एसपरजिलस पैरासिटिकस प्रजाति के कवकों के द्वारा पैदा होता हैं। इसके विकास के लिये 27–27 डिग्री से तापमान अनुकूल होता है। दानों में 12 प्रतिषत या इससे ज्यादा नमी होने पर इस कवक का विकास आसानी से होता हैं। इनका संक्रमण मक्का, मूंगफली की खल और बिनौले की खली में अत्यंत आसानी से हो जाता हैं। अफ्लाटाक्सिन बी1, बी2, जी1 तथा जी 2 चारों विश अत्यंत प्रभावी होते हैं। अफ्लाटाक्सिन बी 1 सबसे अधिक विशाक्त एवं खतरनाक होता है। मुर्गियों को अफ्लाटाक्सिन बी1, सवंमित आहार खिलाने पर यकृत और वक्क में विकशितियां उत्पन्न होती हैं तथा शरीर की रोगरोधी क्षमता कुप्रभावित होती हैं। इस विष का प्रभाव आहार में इनकी मौजूद मात्रा पर निर्भर करता हैं। छोटे चूजों को इससे सवंमित आहार खिलाने पर आहार भक्षण घटता हैं शारीरिक वर्धन दर में गिरावट आती हैं, आहार रूपांतरण दक्षता कुप्रभावित होती हैं और लंगडापन आदि के लक्षण देखने को मिलते हैं। इसी प्रकार अंडे देने वाली मुर्गियों में अंडे के भार में कमी आती हैं। आहार रूपांतर दक्षता अनुपात बढ जाता हैं, निशेचित अंडों से चूजे कम निकलते हैं। तथा अंडे के गुणों में गिरावट आती हैं।

अकराटॉक्सिन

एसपरजिलस एलटेसियस, एसपरजिलस अकरेसियस एवं पेनीसिलियम वेरीकोसम कवकों के द्वारा अकराटॉक्सिन पैदा होती हैं। इसमें अकराटाक्सिन ए एव बी प्रमुख कवक जनित विष हैं। इसके द्वारा मक्का, गेहूं, जौ, जई तथा राई के दाने सवंमित हो जाते हैं। इस कवक जनित विश से मुर्गियों के यकृत और वक्क कुप्रभावित होते हैं तथा रोगरोधी क्षमता घटती हैं। इसकी 2 मि0.ग्रा0 प्रति कि0ग्रा0 की मात्रा आहार में देने पर षारीरिक वर्धन एवं रोगरोधी क्षमता घट जाती हैं। अतः मुर्गियां रोग के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाती हैं। चूजों के आहार में कवक सवंमित खाद्य पदार्थ देने पर इनमें पानी की कमी, गिजार्ड का सूखना दुबलापन इत्यादि

लक्षण देखने को मिलते हैं। इसी प्रकार अंडे देने वाली मंगियों में अचानक अंडे का उत्पादन घट जाता हैं तथा अंड कवच पतले और भंजनषील हो जाते हैं।

जिरेलिनोन

यह कवक जनित विश फ्यूजेरियम मोनिलिफार्मिन, फ्यूजेरियम ट्राइकुटम के संक्रमण से पैदा होता हैं। मक्का तथा अन्य अनाजों में इसका प्राकृतिक संक्रमण होता हैं। इसमें इस्ट्रोजनी गुण पाये जाते हैं। अंडे देने वाली मुर्गियों में इसके प्रभाव के कारण गर्भाशय अपने स्थान से विचलित हो जाता हैं।

सिट्रीनिन

इसका संक्रमण मुख्यतः गेहूं , जौ तथा जई में होता हैं। जो वृक्क को क्षति पहुंचाता हैं। इसके प्रकोप से मुर्गियों में पानी की खपत एवं मल विसर्जन बढ जाता हैं।

टी 2 टाक्सिन

फ्येजरियम ट्राइसीनकुटम कवक के द्वारा टी 2 टाक्सिन पैदा होती हैं। छोटे चूजो के आहार में इसकी 3 पीपीएम से अधिक की मात्रा एवं आहार नली में विकषतियां पैदा हो जाती हैं साथ ही षारीरिक बढवार रूक जाती हैं। षारीरिक संतुलन बिगड जाता हैं और रोग रोधी क्षमता क्षीण हो जाती है।

कवक जनित विशों की सहनीय मात्राये

मुर्गियों में कवक जनित विशों की सहनीय मात्रायें विभिन्न कारकों जैसे मुर्गियों की उम्र, लिंग, पौशणिक स्तर एवं मुर्गियों से तनाव इत्यादि पर निर्भर होती हैं।

केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान द्वारा अनुमोदित की गयी विभिन्न कुक्कुट प्रजातियों के आहार में कवक जनित विषों की सहनीय मात्रा आगे सारणी में दी गयी हैं।

कुक्कुट खाध पदार्थों का कवकों से बचाव

मुर्गियों को कवक जनित विशों के प्रभाव से पूरी तरह बचा पाना कठिन होता है। परंतु आगे वर्णित उपायों के पालन करने से इन विशों के कुप्रभावों को बहुत हद तक कम किया जा सकता है –

1. जो भी कुक्कुट खाध पदार्थ आहार में मिलाना हो वह स्वस्थ, कीट, रहित एवं सूखा हुआ होना चाहिए। अतः खाध पदार्थों के क्रय के समय इन बातों पर पूरा ध्यान देना चाहिए
2. भंडारण किये गये खाध पदार्थों में समय समय पर नमी की मात्रा की जांच करते रहना चाहिए।
3. तैयार आहार या आहारीय खाध पदार्थों का अधिक सयम तक भंडारण नहीं करना चाहिए।
4. कुक्कुट खाध पदार्थों का भंडारण सूखे भंडारों में यथासंभव अवात वातवरण में करने का प्रबंध करना चाहिए।
5. भंडारित की गयी सामग्री में 12 प्रतिषत से ज्यादा नमी नहीं होनी चाहिए।
6. ऐसे सभी उपकरण जैसे दाने और पानी के बर्तनों इत्यादि की समय समय पर सफाई करते रहना चाहिए।
7. यदि आहार में कहीं से कवक का संक्रमण हो जाये, तो उसे वहां से अलग करके नश्ट कर देना चाहिए।
8. कवक के प्रसार को रोकने के लिये आहार में कैल्षियम प्रोपियोनेट 1.1 से 1.4 कि0ग्रा0 प्रति टन आहार या प्रोपियोनिक अम्ल 1.6 कि0ग्रा0 प्रति टन आहार की दर से मिलाने पर अनुकूल परिणाम प्राप्त होता हैं।
9. कवकों की वृद्दि को रोकने के लिये आहार में कॉपर सल्फेट या कुछ अन्य रसायनों का (जैसे अमोनिया, कैल्शियम, मिथाइल एमाइल, ओजोन, सोडियम हाइपोक्लोराइड तथा साल्वेंट मिश्रण इत्यादि) भी प्रयोग किया जाना चाहिए।

प्रबंध व्यवस्था द्वारा कवक जनित रोग के प्रभाव को कम करना

सामान्य रणनीति बनाकर – सामान्य रणनीति बनाकर कवक जनित विष के प्रभाव को कम किया जा सकता हैं, जैसे कवक संक्रमित आहार कुक्कुटों को नहीं खिलाना चाहिए। कुक्कुटों को स्वस्थ और पुश्ट खाद्यो से बना संतुलित आहार खिलाना चाहिए। समय समय पर आहार एवं जल भंडारण पात्रों की स्वच्छता का निरीक्षण करना चाहिए एवं भोजन तथा पेय जल के पात्रों की वर्शा ऋतु में प्रतिदिन तथा अन्य ऋतुओं में 3 से 6 दिन के अंतर पर सफाई करनी चाहिए। आहार का भंडारण लंबी अवधि तक नहीं करना चाहिए और उतना ही आहार बनाना चाहिए जो 15 दिन तक के लिये ही पर्याप्त हो। फार्म पर साफ सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

आहारीय बदलाव करके – आहारीय बदलाव करके कवक जनित रोग के प्रभाव को कम किया जा सकता हैं। आहार में प्रोटीन की मात्रा 25 से 30 प्रतिशत तक बढाने से या आहार में 1–2 कि0ग्रा0 मिथियोनिन या 1.5 कि0ग्रा0 लाइसिन हाइड्रोक्लोराइड प्रति टन की दर से मिलाने पर भी विष के प्रभाव को कम किया जा सकता हैं। इसी प्रकार एक टन आहार में 2–3 ग्राम सेलेनियम, 10–20 कि0ग्रा0 वनस्पति तेल, 300 ग्रा0 कोलिन क्लोराईड और 1 ग्रा0 विटामिन ई मिश्रित करके भी कवक विशों के कुप्रभाव को बहुत कम किया जा सकता हैं।

आहार में फीड एडिटिव्य या माइकोटाक्सिन बांइडर मिलकार – संश्लेशित प्रति आक्सीकारक पदार्थ (एंटी आक्सीडेंट) जैसे – ब्युटिलेटेड हाइड्राक्सी एनीसोल (बीएचए) की 0. 5–1.0 कि0ग्रा0 प्रति टन आहार में मिलाने पर लाभ होता हैं। जडी बूटी मिश्रित उत्पाद (हर्बल मिश्रण) जिसमें कत्था 25 प्रतिषत, फाइलेंथस, निरूरी 40 प्रतिषत, एंडोग्रेफिस पैनीकुलेटा 25 प्रतिशत तथा आहारीय पदार्थ 10 प्रतिशत को मिश्रित करके एक टन आहार में 500 ग्रा0 से 750 ग्रां0 की दर से मिलाने पर कवक जन्य व्याधियों का कुप्रभाव घटता हैं। बहुत से प्राकृतिक एवं संश्लेशित द्रव्यों जिसे कवक विश बंधनी के नाम से जाने जाते हैं। जैसे संक्रियित कोयला 1–2 कि0ग्रा0 प्रति टन, बेंटोनाइट, पडोर, केवोलिन, हाइड्रेटेड सोडियम कैल्षियम एल्यूमिनियम सिलिकेट 2–4 कि0ग्रा0 प्रति टन, इस्टरीफाइड ग्लूकोमेनन 0. 5–1.0 कि0ग्रा0 प्रति टन आहार में मिलाने पर कवक जनित रोग के प्रभाव को कम किया जा सकता हैं।

दिसम्बर माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- पशुओं को अन्तः कृमिनाशक दवाई पशु चिकित्सक की सलाह से समय–समय पर पिलायें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ–साथ खनिज मिश्रण प्रतिदिन खिलायें।
- बरसीम अधिक खिलाने से पशुओं को अफारा हो सकता है, अफारे से बचाव के लिए बरसीम के साथ सूखा चारा मिला कर खिलायें।
- पशुओं को सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्ध करें।
- पशुओं को खुरपका–मुहँपका रोग से बचाव का टीका लगवायें।
- दुधारु पशुओं को थैनेला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकाले और दूध दोहन के बाद थनों को कीटाणु नाशक घोल में डुबोयें।
- बरसीम फसल को सर्दियों में 15 से 20 दिनों के अन्तर पर पानी अवश्य लगायें।
- जई फसल में पहला पानी 21–25 दिनों पर लगायें।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS
UDIT OVERSEAS PVT. LTD.
137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR
Products Range:-
- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic
WE WELCOME YOUR INQUIRY
CONTACT DETAIL
MR. ALOK BENIWAL
MOB: 9660258447

सब्जियो का महत्व एव खीरा वर्गीय फसलो के कीट और रोग एवं उनका प्रबन्ध

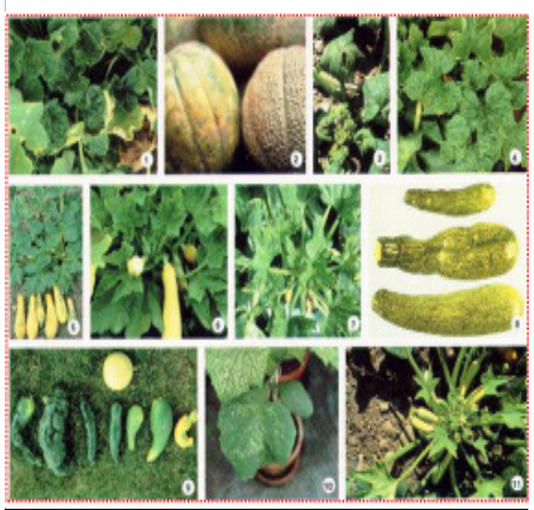

डा. बी. एल. जाखड़, मनोज कुमार जाट' और अरविन्द सिंह तेतरवाल'

कृषि अनुसंधान संस्थान, लाडोल (सरदार कृषि नगर दातीवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, एस.के. नगर गुजरात)

'कीट विज्ञान विभाग कृषि महाविद्यालय, चौ. च. सि., हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

सब्जियो का महत्व

सब्जियों का महतव

मनुष्य के आहार में सब्जियो का बड़ा महत्व है। सन्तुलित आहार एवं स्वास्थ्य के अनुरक्षण के लिए सब्जियां आवश्यक होतीि है। कहते है कि स्वस्थ तन तो स्वस्थ मन। स्वस्थ तन के लिए प्रोटीन, कर्बोहाइड्रेट, वसा,, खनिज लवण और विटामिनों से पूर्ण पोष्टिक आहार आवश्यक है।ताकि हमारा शरीर मानसिक, मनोवैज्ञनिक और नैतिक शक्ति रूप से भी स्वस्थ रहे। प्रोटीन प्राप्ति के दो स्त्रोतों मे पशु प्रोटीन तथा वानश्पति प्रोटीन प्रमूख है। संतुलित आहार में वानस्पति प्रोटीन जो कि सब्जियों से प्राप्त होता है। का अपना एक विशेष स्थान है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई. सी. एम. आर) ने संतुलित आहार के लिए 300 ग्राम प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति के लिए सब्जी खने की संस्तुति की है जिसमें 125 ग्राम पत्तेदार सब्जियां, 100 ग्राम जड़ एवं कंद तथा 75 ग्राम अन्य सब्जियां होनी चाहिए। लेकिन सब्जी की उपलब्धता मात्र 210 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन है यदि उचित ढंग से नियमपूर्वक इनका उपयोग किया जाए तो किसी भी सोन्दर्य प्रसाधन के प्रयोग की अपेक्षा इनसे त्वचा अधिक साफ व नरम और आंखे ओजवान बनती है।

खनिज लवण : (उपदमतंस सज) मानव शरीर की उचित वृद्वि और विकास के लिए कम से कम उस खनिजो की आवश्यकता होती है। इनमे कैल्शीयम, लोहा, तथा फासफोरस तत्वो की आवश्यकता काफी होती है और सब्यिों को छोड़ अन्य किसी भी खाद पदार्थ मे इनकी पर्याप्त मात्रा नही पायीं जाती है। उपर्युक्त खनिजो के अतिरिक्त सब्जियो से आयोडिन तथा सोडियम जैसे तत्व भी मिलते है जो यद्यपि अत्यन्त अल्पमात्रा मे ही पाए जाते है। तो भी मानव शरीर के लिए इनका बडा महत्व है। कुछ सम्पूर्ण खनिजो का विवरण निचे दिया जा रहा है।

1कैल्शीयम : calcium हडियो को मजबूज तथा शरीर को रोग रोधी बनाने हेतु इसकी आवश्यकता होती है। उसके अभाव मे बच्चे सुखा रोग व चिडचिडापन तथा मन्दित वृदि के शिकर हो जाते है। आहार मे कैल्शीयम की कमी के रहने से आस्टेमेलेशिया osteomalasiaहोने के कारण शिशू जन्म मे कष्ट होता है। यह शरीर मे लौह की बचत मे सहायक होता हैं चौलाई, पालक, मेंथी, परवल, हरी मिर्च, धनिया, सेम, बन्द गोभी ,गाजर, फुल गोभी , प्याज तथा टमाटर से कैशीयम की पूर्ति होती है।

2लोहाः iron फलों की अपेक्षा सब्जियों मे लोहा की मात्रा अधिक पायी जाती है। शरीर की आवश्यकता का अधिकांश लौहा हरी पतियों से टी प्राप्त किया जा सकता है और हरी पतियां पोषण–जनित रत्काल्पता तक का सुगमता से उपचार कर सकती है। लोहा लाल रूधिर कणिकाओं का भी एक अनिवार्य अंग है तथा शरीर में पाया जाने वाला सबेन्तिम आक्सीजन संवाहक है। इसे पालक, सलाद, बन्द गोभी, मटर, सेम, चौलाई, मैंथी व टमाटर आदि से प्राप्त किया जा सकता है।

3फास्फा`रसः phosphorash शरीर के सभि सक्रिय उत्तकों के लिए यह अनिवार्य तत्व है। हडिडयों मृदु उत्तकों की कोशिकाओं के गुणन तथा उततकों में उचित द्रवअेय के अनुरक्षण के लिए इसकी आवश्यकता पड़ती है उर्जा नियुक्ति करने वाले कार्बोहाइड्रेटों के आक्सीकरण मे भी इसका, महत्वपूर्ण योगदान रहता है। प्याज , लहसून, परवल, मूली, शलजम, कददू के पते , अरबी, आलू, गाजर तथा फूल गोभी प्रचूर मात्रा मे प्राप्त किया जा सकता है।

विटामिनस vitamins सब्जियों मे निम्नलिखित विटामिन पाये जाते है।

विटामिन 'ए'Vitamin A यह वसा– विलेय तथा वृदि और जनन के लिए आवश्यक होता है। भोजन मे इसकी कमी के कारण रंतौधी, पथरी, मुहांसे, त्वचा का सुखापन जैसे कई बिकार उत्पन्न हो जाते है। शरीर मे विटामिन 'ए' की समुचित मात्रा उपलब्ध होने से आंखे ओजवान रहती है। वृदि सामान्य होती है तथा आंखे व श्वास–प्रणाली के विभिन्न अंग उत्तम दया मे रहते है इस विटबमिन को गाजर, मटर, पालक, शलजम, चुकन्दर, टमाटर, चोलाई, धनिया, पत्तागोभी, मूली, हरी मिर्च तथा मेंथी सब्जियों से प्राप्त किया जा सकता है। सब्यिो की हरी पत्तियां खने से हमें सीधे कैरोटिन नामक पदार्थ प्राप्त होता है। जो शरीर के अन्दर विटामिन 'ए' मे परिवर्तित हो जाता है।

विटामिन 'बी– vitaamins इसको थइमीन भी कहा जाता हैं । इसकी कमी से बेरी बेरी रोग ,भूख मे कमी, भार मे कमी तथा शरीर के तापमान मे गिरावट आदि विकार उत्पन्न हो जाते है। शरीर की वृदि एवं जनन के लिए यह अनिवार्य होता है हरि पतियां विब्टामिन 'बी' की धनी होती हैं जैसे सलाद व बन्द गोभी मअर, सेम, लोकिया, मेंथी, अरबी, चौलाई, सरसों का साग, गाजर एवं प्याज मे जेसी सब्जियों मे भी विटामिन 'बी' पाया जाता है।

विटामिन 'सी' vitamins c इसे एस्कोर्बिक अम्ल भी कहते है। इसकी कमी के कारण स्कर्बी रोग, गठिया, दांत व मसुडो का कमजोर हो जाना आदि रोग हो जाते है। शलजम, हरी मिर्च, ध ानियां फुलगोभी, गांठ गोभी, करेला तथा अन्य हरी सब्जियों मे विटामिन 'सी' की प्रचूर मात्रा पायी जाती हैं तली हुई सब्जियों की अपेक्षा कच्ची या उबली हुई सब्जियों मे विटामिन 'सी' की प्रचूर मात्रा पायी जाती हैं क्योंकि पकाने से इस विटामिन की कुछ मात्रा नष्ट हो जाती है ।

विटामिन 'डी' vitamin Dयह एक वसा विलेय एवं रिकेट–रोधी विटामिन है। इसकी कमी से सुखा रोग या रिकेटस हो जाता है। हडिडयों की उचित रचना एवं मजबूत दांतों के लिए विटामिन 'डी' की अच्छी पूर्ति अनिवार्य है। यह कैल्सीयम, तथा फास्फोरस लवणो का उचित उपयोग करके हडिडयों के कैल्सीकरण में भी सहायता करता है। हरि सब्यिां, आलू, गांठ गोभी, सहजन आदि इस विटामिन की धनी है।

विटामिन 'ई' vitamin यह वसा विलेय एवं जनन के लिए अनिवार्य होता हैं यह बन्ध्यता रोध ी विटामिन है और हरि पति वाली सब्जियॉ जेसे बन्द गोभी, सलाद, सिंघाडा तथा वनस्पति तेलो मे पाया जाता है।

विटामिन 'जी' vitamin यह एक वृदिर्वधक, जल विलय विटामिन है। आहार मे कमी से भूख आभार में कमी होती है। तथा मुंह दूखना, पेलेग्रा तथा गंजापन जैसे विकार उत्पन्न हेते है। यह शारिरिक वृदि एवं स्वस्थ त्वचा के लिए अनिवार्य हैं यह हरे पौधो तथा हरि पत्तियों के विकास के दौरान बनता है जो इस विटामिन के अच्छे स्त्रोत है।

ऐमीनो अम्ल Amino aeids ये ऐसे अम्ल होते है जिनमे हाइड्रोकार्बन मूलक के एक हाइड्रोजन अणु का स्थान एक ऐमीनो वर्ग ले लेता है। मनुष्य की समुचित शारिरिक वृदि एवं विकास के लिए उत्यन्त आवश्यक होते है। यधपि वानस्पतिक प्रोटीनो के ऐमीनो अम्ल संघटन मे अत्यधिक विविधता पायी जाती हैं परन्तु इन प्रोटीनो के मात्रात्मक रूप से अधि ाक महत्वपूर्ण न होने के कारण इस विविधध्ता का पोषण पर कोई प्रभाव नहीं पडता है।

कार्बोहाईड्रेस (बंतइवीलकतंजमे): आलू , शकरकन्द तथा बीन के सुखऐ हुए बीजों का एक उर्जा बहुल स्त्रोत के रू मे विशेष महत्व है। गुददेदार जडे, कनद एवं शकरकंद भी कार्बोहाइड्रेटस के अच्छे स्त्रोत है।

गुणवता संबंधी कुछ सुझावः सब्जियों मे पाए जाने वाले पोषक तत्व शरीर की अनेक जैविक क्रियाओं के लिए पर्याप्त है अतः स्वस्थ रहने के लिए सब्यिों के उचित उपयोग की जानकारी महत्वपूर्ण है नीचे कुछ सुझाव दिये जा रहे है जिनके आधार पर सब्जी प्रयोग करने से उनमे उपलब्ध पौष्टिक तत्वों की पूर्ण प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकती है।

1. जहां तक संभव हो सके सब्जियों को छिलके सहित या छिलके को बहुत महिने उतार कर ही पकाना चाहिए क्योकि पोषक तत्व, विटामिन व खनिज लवण छिलके के ठीक नीचे ही एकत्र रहते है।

2. जहां तक हो सके ताजी सब्जियां ही प्रयोग मे लाना चाहिए क्योकि ताजी सब्जियों मे पोषक तत्व परिरक्षित सब्जियों से अधिक होते है।

3. हमेशा सब्यिों को पकाने से टीक पहले बडे–बडे टुकडो मे काटे उससे उनमे पोषक तत्वों की हानि न्यूनतम होती है सब्जियों को कभी भी काटने के बाद नही धोना चाहिए हमेशा उन्हे धोकर ही कांटे।

4. सब्जियां पकाने मे कम से कम पानी का उपयोग करें सब्जियों या साग से निकले पानी को कभी भी फैंकना नहीं –चाहिए क्योकि उनमे खनिज लवणों की प्र्याप्त मात्रा होती है।

5. पूरी तरह पक जाने के बाद ही सब्यिों को खाना चाहिए ओर एक बार पक जाने के बाद सब्यिों को बार – बार गर्म नही कना चाहिए इसमे उनकी पौष्टिकता विटामिन एवं पोष्क तत्वों का ह्रास होता है।

6. सब्जियो को पकाते समय अधिक मसाले,खाने योग्य सोडा,और रंग आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इसमे भी काफी हद तक पोषक तत्व नष्ट हो जाते है।

7. सब्जियो को उबालने के लिए हमेशा छोटे मूहं वाले बर्तनों का प्रयोग करना चाहिए और बर्तन का मुहं ढक्कन से बंद रखना चाहिए इससे सब्जियो मे उपस्थित विटामिनो एवं पोष्क तत्वों का कम ह्रास होता है। इसलिए प्रेशर कुकर से बना खाना अधिक पौष्टिक होता है।

8. उबली हुई या सुखाई हुई सब्जियों मे विटामिन 'सी' की काफी मात्रा नष्ट हो जाती है। अतः जहां तक संभव हो सकें सब्जियों को ताजा एवं कच्चा खाना चाहिए जिससे विटामिन 'सी' की अधि ाकतम मात्रा मिल संके।

तालिका –2 दैनिक संतुलित आहार मे खाद्यान्न फलो एवं सब्जियों की मात्रा

खाद्यान्न	पुरूष वर्ग के लिए दैनिक आवश्यकता (मात्रा ग्राम मे)		महिला वर्ग के लिए दैनिक आवश्यकता (मात्रा ग्राम मे)	
	शाकाहारी	मांसाहारी	शाकाहारी	मांसाहारी
अनाज	420	420	420	420
दाले	60	65	60	50
पत्तेदार सब्जियां	125	125	100	100
अन्य सब्जियां	75	75	100	100
कंद मूल	100	100	75	75
फल	100	100	100	100
दूध	600	400	600	400
पनीर	40	.	40	.
वसा व तेल	40	40	35	40
चीनी व गुड	40	40	30	30
मांस व मछली	–	100	–	60
अंडे	.	60	.	60

पोषक तत्व	पोषक तत्वो की कमी से होने वाली प्रमुख बीमारी	सब्जियां
उर्जादायक	शारीरिक क्रियाओ मे शिथिलता	सेम ,मटर, शकरकंद, चुकन्दर अरबी, प्याज, लहसुन आदी
प्रोटीन (चतवजमपद)	शरीर के निर्माण, विकास व मरम्मत की व्यवस्था प्रभावित	मटर, सेम,लोबिया, मेंथी, बथुआ, चौलाई, ग्वार की फली आदि
विटामिन ए	रतौंधी, केरेटोमेलिशिया	गाजर, पालक,हरा शलजम, चौलाई, धनियां,टमाटर,खरबुजा,पत्ता गोभी, मूली, लौकी आदि
विटामिन बी	बेरी – बेरी, मुह के रोग	मटर, सेम, अरबी, लौमा, बीन, मैथी, चौलाई, शलजम, लोहिया आदि
राईबोफलेविन बी–2	मुह मे छाले, जीभ एवं ओष्ट का फटना	लोबिया की हरी पत्तियां, मटर ,सेम,टमाटर, आदि
नियासिन (दपंबपद) या निकोटिनिक अम्ल (दपबवजपदपब ंबपक)	पेलेग्रा रोग	हरि सब्जियां, सेलेरी, चुकन्दर की हरि पत्तिया गांठ गोभी, शलजम, फूल गोभी आदि
विटामिन सी (ंेवतइपबंपक)	स्कर्वी, मसूड़ो व दांतो का क्षय, पाचन की गड़बड़ी	शलजम, हरि मिर्च, पत्तागोभी, धनियां, फूल गोभी, करेला, टमाटर आदि
विटामिन डी	रिकेटस या सुखा रोग, हड्डियों का कमजोर होना	टालू, गांठगोभी , शलजम आदि
विटामिन ई	सन्तानोत्पादन शक्ति में कमी, बांझपन	सिंघाडा, पत्तेदार व हरि सब्जियां, लेहस, शलजम के`पते आदि
विटामिन के	रक्त का न जमना, हृदय का कार्य प्रभावित	सिंघाडा, ऐस्पेरेगान, बंद गोभी, टमाटर, मैथी
कैल्शीयम	हड्डियों का अपूर्ण विकास, ओस्टोमेलेशिया	चौलाई, पालक, मैथी, परवल , हरि मिर्च, धनियां, मूली के पत्ते, अरबी आदि
फास्फोरस	हड्डि का निर्माण एवं जैविक क्रियाए प्रभावित	प्याज,लहसुन,परवल,मूली,शलजम,अरबी, अरबी के पत्ते
लोहा	रक्त की कमी(एनीमीया)	चौलाई, पूदीना, पालक, मैथी, धनिया, पत्तागोभी, खीरा, करेला, आदि

खीरा वर्गीय फसलो के कीट
pests of culurbits

रेड पम्पकिन बीटिल (तमक चनउचापद इममजसम): यह बीटील (।नसंसव चीं़त विअबपबंससन) 5 से 8 मि.मी. लम्बी नारंगी रंग की होती है। यह बीटिक वृदि की प्रारम्भीक अवस्था मे ज्यादा हानि पहुंचाती है। यह पत्तियो की शिराओं के बीच का भाग खाती है। यह खरबुजा,कददू,खीरा एवं लौकी इनके लिए ज्यादा हानिकारक है। केवल करेले पर इसका आक्रमण कम होता है। शीत झड मे यह कुडे करकट,खीरा वर्गीय सुखी लताओ एवं ख्रपतवारो पे छिपी रहती है औ बसन्त ऋतु मे तापमान बढते ही बाहर निकल कर नये उगे पौध ों पर आक्रमण करती है। इसकी रोकधाम के लिए निम्नलिखित उपाय सुझाये गये है।

1अगेती बुआई करनी चाहिए। इससे कीट का आक्रमण कम होता है।

2कीट सुर्योदय से पहले सुस्त रहते है। अतः इनको पकड कर मार देना चाहिए।

3कीट रोधी किस्मे उगानी चाहिए।

4पौधो पर 5 प्रतिशत मैलाथियान 20 से 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर से बुरकाव करना चाहिए।

एपीलैक्ना बीटिल (मचपसमबीदं इममजस): इसको हाडा विटिल भी कहते है इसके प्रोढ़ एवं लाखा दोनों ही पौधों की पत्तिया खते है। यह भी पत्तियो के शिराओ के बीच के भाग को खाती है। जिससे पौधो की पत्तियो पर जले हुए धब्बो के समान हो जाते है। इसकी आडे से लेकर प्रोढ़ तक की सभि अवस्थाए पौधे पर ही व्यतीत होती है। अतः इसको नष्ट करना आसान रहता है। इसके नियंत्रण के निम्न उपाय है।

1इसके अण्डे, लारव एवं प्रोढ़को पकडकर मार देना चाहिए।

2मैलापिदान पाउडर 5 प्रतिशत 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर के हिसाब से भूरकना चाहिए।

3मैलाथियान 50 ई.सी. 004 प्रतिशत का छिडकाव करना चहिए।

फल की मक्खी Fruit डेकस (कंबने) कुकुर्बिटी cucurbita और सीलीयेटस ciliatus मे मक्खियों खीरा वर्गीय फसलो को ज्यादा हानि पहुंचाती है। ओवीपीगीटर से अण्डाशय या फलो मे छेद करके अण्डे देती है। इस छेद से गोद सा निकलता हो जिसमे यह बन्द हो जाता है। तथा आक्रमण का पता नही चलता हैं अण्डे फल के भीतर ही फुटते है उनसे निकले गिडार maggot पल के भीतर ही भीतर बढते रहते है। और गुदे से आहार प्राप्त करते रहते है। यदि आक्रमण भारी होता हो तो फल गिर जाते है। इसकी रोकथाम के लिए निम्न उपाय सुझाये गये है।

1कीट से प्रभावित फलों को नष्ट कर देना चाहिए।

2फलो को पकने से पहले ही तोड लेना चाहिए।

3फलो को प्रारम्भीक अवस्था मे ही मैलाथियान 0ण्02 प्रतिशत का एण्डोसल्फान 0ण्1 प्रतिशत का छिडकाव करना चाहिए।

एफिड (Afhid): ये बहुत छोटे–छोटे कीट होते है। ये पौधो के नर्म भागो से रस चूसते है जिससे पौधो से भोजपर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। इसमे अतिरिक्त ये विषाणु फैलाने मे सहायक होते है। इससे प्रभावित पौधो की पत्तियां एवं अन्य भाग पीले, मुरझाये हुए, मुडे हुए तथा बाद मे सुख जाते है वैसे तो एफिड वर्षा ज्यादा नमी, बादलो वाले मौसम इसकी जनसंख्या को बढावा देते है। इसके नियंत्रण के निम्न उपाय सुझाये गये है।

1कीट से ज्यादा प्रभावित भाग को हटाकर नष्ट कर देना चाहिए।

2मैलासियान 0ण्1 प्रतिशत या मेटासिसटोम्स 0ण्2 प्रतिशत या मोनोक्रोटोफॉस 0ण्05 प्रतिशत का छिडकाव करना चाहिए।

खीरा वर्गीय फसलो के रोग
Disease of cacurbits

चूर्णिल मिल्डयू (च्वूकमतल उपसकमू): यह रोग एक फफुंद एरीसाइफी सिकोरेसिएरम (म्तलेपचीम बपबीवतंबमंतनउ) के द्वारा होता है। खीरा वर्गीय सभी फसले इससे प्रभावित होंती है। लेकिन करेला इस रोग से कम प्रभावित होता है। इस रोग मे पुरानी पत्तियो की निचली सतह पर सफेद धब्बे नजर आते है। धीरे–धीरे इन धब्बो की संख्या एवं आकार बढ़ जाता है। तथा बाद मे पत्तियो के दोनो ओर चूर्णिल वृदि दिखाई पडती है। ये पत्तियां पीली पड जाती है तथा इनकी सामान्य वृदि रूक जाती है। जब नई पत्तियो पर इसका आक्रमण होता है। तो ये हरियाहीन हो जाती है तथा पौध ा मर जाता हैं इसके नियंत्रण के निम्न सुझाव दिये गये है।

1रोगी पौधो को इक्ठठा करके जला देना चाहिए।

2कदद एवं तरबुज मे गन्ध ाक का चूर्ण 20 से 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से बुरकाते है। लेकिन तरबुज एवं खीरे मे गन्धक के चूर्ण से हानि होती है।

3खरबुजा खीरा एवं अन्य फसलो के लिए केराथेन 0ण्2 प्रतिशत का छिडकाव या 25 से 30 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर केराथेन की बुरकरी बुरकते है।

4रोग रोधी किस्मे उगानी चाहिए जेसे तरबूज की अकार्बनिक किस्म इस रोग से सहन करने की क्षमता रहती है।

वर्तमान जलवायु परिवर्तन में जौ एक लाभ दायक फसल

डा0 सिया राम विश्वकर्मा, डा0 बी0 एन0 सिंह एवम डा0 विनोद सिंह

आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद–224229 (उत्तर प्रदेश)

अनादि काल से जीव जगत का प्रकृति से गहरा सम्बन्ध रहा है। विकास की अन्धी दौड़ में मानव नजदीकी पर्यावरण को नष्ट करता चला जा रहा है। विलासिता वाली वस्तुएं जैसे–सड़क पर दौड़ने वाले वाहन, रेफ्रजरेटर, एयरकन्डीसनर, अग्नीशामक उपकरण, डस्ट स्प्रे उपकरण जीव राशी रसायनों का उत्पादन एवं गैसों के बढ़ते प्रयोग से ओजोन परत का क्षरण तेज हो गया है। वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे है कि हम बेखबर धरती का अन्धाधुन्ध दोहन किये जा रहे है। एक अनुमान के अनुसार जलवायु परिवर्तन के कारण भारत के सकल घरेलू उत्पाद में पाच प्रतिशत की कमी आ सकती है। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्रीन हाउस गैसें (जलवाष्प, कार्बनडाइआक्साइड, मिथेन व ओजोन) का प्रभाव उत्पन्न हो रहा है। यह देखने में आया है कि जलवाष्प से 36 से 70 प्रतिशत, कार्बनडाइआक्साइड 9 से 26 प्रतिशत, मिथेन से 4. 9 प्रतिशत व ओजोन से 3से 7 प्रतिशत तक हमारे वायुमण्डल में बुरा प्रभाव उत्पन्न होता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण

1.ग्रीन हाउस गैसें– (तापमान मे बृद्धि करते हैं)

2.औद्योगिकीकरण व जनसंख्या बृद्धि–

3.सौर विकिरण की मात्रा में परिवर्तन (पृथ्वी पर उर्जा की बढ़ोत्तरी)

4.पृथ्वी की कक्षा में परिवर्तन

5.महाद्विपीय विस्थापन

एक अनुमान के अनुसार धरती के तापक्रम में 1 डिग्री सेल्सियस बढोत्तरी से कृषि उत्पादन में 10 प्रतिशत की गिरावट आती है। अतः खाद अनाजों के उत्पादन में भविष्य में काफी कमी जा जायेगी जलवायु परिवर्तन के कारण ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ रहा है। धरती के धुओं पर जमा बर्फ तेजी से पिघल रहा है। जिससे समुद्र के जलस्तर को बढा रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण वायु प्रदूषण, भूख व बीमारी से हर साल अनुमान से ज्यादा लोग मारे जा रहे है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी एक रिर्पोट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन के कारण पेय जल और सिंचाई के लिए उप्लब्ध होने वाले जल पर भी बुरा असर पड़ेगा। रिर्पोट के अनुसार जमी बर्फ व ग्लेशेयरों के पिघलने से दुनिया भर की 40 प्रतिशत आवादी प्रभावित होगी।

तापमान का कृषि पर प्रभाव–

वैज्ञानिकों के अनुसार इस समय विश्व का तापमान औसतन 15 डिग्री सेन्टीग्रेट है। वर्ष 2100 तक इसमें 1.5 से 6 डिग्री तक बढ़ने की सम्भावना है। इस प्रकार हमारे कृषि उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ेगा उदाहरण के लिए गेहूॅ एवं जौ आदि अनाज फसलों के लिए आवश्यक ठण्ड का मौसम नही हो पायेगा अथवा जितनी ठण्ड चाहिए उतनी ठण्ड नही मिलेगी वहीं जल्दी गर्मी आने के कारण एवं ज्यादा गर्मी के कारण अनाजों के पकने की रतार बढ़ सकती है जिससे अनाजों में उपस्थित पौषिटकता हेतु आवश्यक तत्वों का समावेश नही हो पायेगा। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि आने वाले समय में हमारे लिये खाद्यान्न सुरक्षा का संकठ पैदा कर सकता है।

पृथ्वी का तापमान बढ़ने से अनुमान है कि पूरे विश्व में 20 से 30 प्रतिशत पौधों एवं जानवरों की प्रजातियां लुप्त होने की कगार पर होंगी ऐसा इस लिए होगा की तापमान बढ़ने के साथ–साथ कार्बनडाइआक्साइड की मात्रा बढ़ेगी जिससे वनस्पतियों और अन्य प्रजातियों का जीवन चक्र तथा प्रजनन प्रभावित होगा। तापमान बढ़ने पर घास कुल के पौधे सिमटे जायेगें और पशुपालन पर भी प्रभाव होगा।

जलवायु परिवर्तन में जौ की खेती ही लाभदायक

अनाजों में धान्य राज्य कहा जाने वाला जौ एक पौष्टिक व शीतलता प्रदान करने वाला फसल है। यह असिंचित व समस्याग्रस्त क्षेत्रों में सफलता पूर्वक उगाया जाता रहा है। अन्य धान्य फसलों की तुलना में इसे कम उर्वरक एवं कम पानी की

आवश्यकता पड़ती है। कम सुविधा में संतोषजनक उपज देने वाली इस फसल पर जलवायु परिवर्तन का बहुत कम प्रभाव देखा गया है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को देखने के लिए बिगत वर्ष नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय में तीन भिन्न प्रदेशों की चार प्रजातियां तीन भिन्न भिन्न सप्ताहों (अक्टूबर का आखरी सप्ताह नवम्बर का तीसरा सप्ताह एवं दिसम्बर का आखरी सप्ताह) में बोकर उपज व उपज के अन्य घटाकों पर अध्ययन किया गया और यह पाया गया कि दिसम्बर के आखरी सप्ताह, में बोये गये फसल को छोडकर शेष माहों में जौ की बुवाई कर उपज व उसके अन्य घटकों पर कोई विषम प्रभाव देखने को नही मिला।

सुविचार

केवल कर्महीन ही ऐसे होते हैं, जो भाग्य को कोसते हैं और जिनके पास, शिकायतों का बाहुल्य होता है।

- जवाहरलाल नेहरू

जब आप कुछ गंवा बैठते हैं, तो उससे प्राप्त शिक्षा को न गंवाएं।

-दलाई लामा

हसंते रहो!!

लडका अपनी गर्लफ्रेंड से - अमीर से अमीर आदमी भी मेरे पिताजी के आगे कटोरी लेकर खडा रहता है
गर्लफ्रेंड - फिर तो तुम्हारे पिताजी बहुत अमीर होंगे
लडका - नहीं वह गोलगप्पे बेचते है।

****

एक छात्र ने गणित के अध्यापक से कहा - सर ! अंग्रेजी के अध्यापक तो अंग्रेजी में बातें करते है ˝आप भी गणित में बात क्यों नहीं करतें ? गणित अध्यापक - ज्यादा तीन पांच न कर फोरन नौ -दो ग्यारह हो जा , नहीं तो चार पांच रख दूगां तो छठी का दूध याद आ जाएग़ा

सौम्या कपिल

(पाक्षिक राशि फल)

01—12—2013 से 15—12—2013

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	सुख प्राप्ति,धन लाभ,यात्रा योग,विरोधियो से मेल मिलाप,शांतिपूर्ण समय रहे
BKT	स्त्री पुत्र द्वारा लाभ,शीतलता,किन्तु लाभपूर्ण समय रहे
CLU	आरम्भिक समय मे परेशानिया,किन्तु अंत मे धन पद ,प्रतिष्ठा,बड़ेगी,तथा .शुभफल की प्राप्ति होगी,
DMU	मानसिक परेशानिया ,कार्य अवरोध,भाईबंधुओ मे विरोध ,किन्तु स्त्री लाभ का ....योग भी बनता है
NEW	पेट सम्बंधी रोग.की संभावना मानसिक शीतलता के साथ साथ धनलाभ का ....योग बनता है!
FOX	स्वास्थ नरम ,उदर रोग ,शांतिपूर्ण समय रहता है,
GPY	धन हानि ,लाभ कम,मानसिक चिंतन अधिक र्‍हे,
HQZ	पिछले समय से चल रही बाधाओं,से पलायन वादी विचार ,भाईबंधु द्वारा ....असहयोग रहे
IR	सम्मान ,धन लाभ ,व्यापार लाभ,मित्रो से सहयोग लाभपूर्ण समय रहे,

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नामः..
संस्था का नामः..
पूरा पताः..
ग्राम :.....................................तहसील :...

जिलाः.....................................राज्यः.............................पिन कोड ☐☐☐☐☐☐

दूरभाष कार्यः..................................निवासः..................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :**151** ☐ तीन वर्ष :**351** ☐ पांच वर्ष :**501** ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :.....................................
बैंक का नामः.................................. ड्राफ्ट चेक क्रमांकः.......................दिनांकः................
स्थानः.................................. प्रतिनिधि का नामः.......................हस्ताक्षर सदस्यः...............
दिनांकः.......................

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

उन्नत चूल्हे बहुत उपयोगी

डॉ. मीना सनाढ्य
आचार्य (गृह विज्ञान), प्रसार शिक्षा निदेशालय
म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि., उदयपुर

कृषि कार्यों में कृषक महिलाऍ 60 प्रतिशत से भी अधिक कार्य करती है, पशुपालन का लगभग 90 प्रतिशत कार्य महिलाओं द्वारा सम्पादित होता है। इसके अतिरिक्त दूरस्थ स्थानों से ईंधन व पेयजलप्रबंधन भी उनकी जिम्मेदारी है। एक शोध के अनुसार कृषक महिलाऐं औसतन 14 घंटे कृषि एवं संबंधित कार्यों पर खर्च करती हैं इस तरह वे एक मानव मशीन बन कर रह गई हैं। आज भी कृषि एवं घरेलू कार्यों हेतु परम्परागत तरीके काम में लिये जा रहे हैं जिससे मानव समय व श्रम की हानि हो रही है। गांवों में आज भी अमुमन 90 प्रतिशत घरों में भोजन पकाने के लिए मिट्टी के चूल्हे काम में लिये जाते हैं जिनकी तापीय क्षमता बहुत कम होती है, जिससे भोजन पकाने में अधिक ईंधन व समय की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त परम्परागत चूल्हे से निकलने वाला धुऑ महिलाओं व बच्चों की आंखों व फेफडों को बहुत नुकसान पहुॅचाता है व रसोई घर काला होता है सो अलग। इन सब बातों से बढ़कर ईंधन के लिये पेड़ काटने से सबसे अधिक नुकसान पर्यावरण को हो रहा है। महिलाऐं कृषि अवशेष व गोबर के कंड़े को चूल्हे जलाने के काम में लेती हैं जिससे खेत में इसे खाद के रूप में उपयोग में नहीं लाया जा सकता व इससे खेत (भूमि) की उर्वरता व पैदावार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

महिलाऐं यदि घरेलू कार्यों में उन्नत प्रौद्योगिकी का समावेश करें तो श्रम व समय की काफी बचत की जा सकती हैं व बचे हुए समय का उपयोग सष्जनात्मक तरीके से करके घर—परिवार की आमदनी बढ़ाने में सहयोगी हो सकती हैं। महिलाऐं पर्यावरण सुरक्षा के साथ भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाये रख सकती हैं। इसके लिए हमें (सरकारी, गैर सरकारी, अन्य संस्थाओं) कुछ प्रयास करने होगें जैसे कृषक महिलाओं को ”उन्नत चूल्हे” के उपयोग के बारे में शिक्षित करना होगा। इसके उपयोग द्वारा महिलाऐं 30—40 प्रतिशत लकड़ी की बचत कर सकती हैं जिससे वष्क्षों की कटाई में बचत के साथ हमें स्वच्छ पर्यावरण मिल सकेगा जिसकी आज बहुत अधिक जरूरत है।

उन्नत चूल्हा क्या है—उन्नत चूल्हा परम्परागत चूल्हे का ही परिवर्तित रूप है इसमें दहन व उष्मा का सुचारू परिचालन होता है तथा उष्मा के विकिरण एवं संवहन से हाने वाली हानि को कम किया जा सकता है। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय द्वारा स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के चूल्हों का निर्माण किया गया है जिनमें राजस्थान राज्य के लिए उपयुक्त ”उदयराज” दो बर्तन रखने वाला व एक बर्तन वाला चूल्हा ”चेतक” प्रमुख है। इन चूल्हों को बनाने के लिए ईंट व सीमेंट की आवश्यकता होती है। ये चूल्हे काफी टिकाऊ होते हैं (कम से कम 5 वर्ष तक) व इनकी तापीय दक्षता 25 प्रतिशत तक होती है। वर्षा के पानी या अन्य कारणों का इन चूल्हों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इन चूल्हों में भोजन को बहुत समय तक गर्म रखा जा सकता है अतः दाल, सब्जी को बार—बार गर्म नहीं करना पड़ता जिससे भोजन के पौष्टिक तत्व बने रहते हैं।

उन्नत चूल्हा कैसे बनायें—इन चूल्हों को बनाने की तकनीक अत्यन्त आसान है, महिलाऐं एक बार प्रशिक्षण प्राप्त कर आसानी से इसे बना सकती हैं। इसकी बनावट इस प्रकार की होती है कि चूल्हे में ईंधन को जलाने के लिए जितनी हवा (आक्सीजन) की जरूरत हो उतनी ही उसे मिले न कम न अधिक। यदि ईंधन को हवा कम मिली तो ईंधन अच्छी तरह नहीं जलेगा व धूंआ भी अधिक होगा व यदि ईंधन को हवा अधिक मिली तो ईंधन के जलने की गति तेज हो जायेगी व भोजन पकने में उष्मा का समुचित उपयोग नहीं हो पायेगा जिससे चूल्हे की दक्षता में कमी आयेगी। परम्परागत चूल्हों में मुख्यतया दो कमियॉ देखी गई हैं पहली चूल्हे का मुंह आगे से खुला होता है जिससे ईंधन ड़ालने पर आधी उष्मा बर्तन के बाहर व्यर्थ में बेकार होती है दूसरा, हवा का आवागमन सही नहीं हाने से ईंधन की खपत अधिक होती है। उन्नत चूल्हे में इन कमियों को दूर कर इनकी तापीय दक्षता को बढ़ाया गया है।

”चेतक” चूल्हा— इसकी तापीय दक्षता 21 प्रतिशत है। यह चूल्हा नवीनकरणीय उर्जा स्त्रोत् विभाग उदयपुर ने विकसित किया है एंव पंचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर व नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत है। इस चूल्हे पर एक समय में एक वस्तु पकायी जा सकती है, इसकी बनावट इस प्रकार की होती है कि बर्तन को पूरी उष्मा मिलती है जिससे भोजन जल्दी पकता है। सीमेंट पाइप व चिमनी से धुऑं रसोई घर के बाहर निकलने से महिलाओं के स्वास्थ्य पर भी कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता। चेतक चूल्हा बनाने के लिए ईंट – 25 नग, सीमेंट – 8 कि.ग्रा., रेत —30 कि.ग्रा., ए.सी. पाईप (3” व्यास, 10′ लं) ′.1 सेट कावल, सुरंग (2” व्यास, 4′ लं) 01 सेट की आवश्यकता होती है। कारीगर की मजदूरी यदि

रू. 200/—माने तो चूल्हे की कीमत लगभग रू. 1000 आती है।

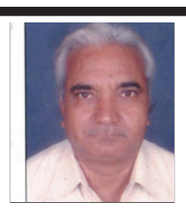

दो बर्तन वाला ”उदयराज“ चूल्हा— इस चूल्हे पर दो वस्तुऐं एक साथ पकायी जा सकती हैं। इस चूल्हे की तापीय दक्षता 26 प्रतिशत है। इस चूल्हे को नवीकरणीय उर्जा स्त्रोत् विभाग, उदयपुर द्वारा विकसित किया गया एवं पंचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर व नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत किया गया है। इस चूल्हे की विशेषता यह है कि इसमें ईंधन का उपयोग दो वस्तुऐं पकाने केलिए होता है, जिससे ईंधन की बचत के साथ—साथ श्रम व समय की भी बचत होती है। यदि आपको दाल/सब्जी व रोटी बनानी है तो चूल्हे के पहले मुख पर दाल पकने रखें व रोटी बनाने के लिए दूसरे मुख्य पर तवा / केलडी रखे। दाल जब दो—तीन बार अच्छी तरह उबल जाये तब उसे दूसरे बर्तन वाले मुख पर रखें व वहां से तवा हटा कर चूल्हे के पहले मुख पर रख दें। इससे आप पायेगें कि तवा गर्म हो चुका है उस तवे पर रोटी ड़ालने पर जल्दी सिक जायेगी व मंदी—मंदी ऑच पर दाल/सब्जी भी पक जायेगी। इस प्रकार सीमित ईंधन में दो वस्तुऐं एक साथ पक जायेंगी।उदयराज (दो बर्तन वाला) चूल्हा बनाने के लिए ईंट 35 नग, सीमेंट 12 कि.ग्रा., रेत 50 कि.ग्रा., ए.सी पाईप (3” व्यास, 10′ लं)1 सेट / कावल, सुरंग (2) व्यास, 8′ लं) व कारीगर की मजदूरी रू. 300 इस प्रकार उदयराज चूल्हा बनाने में लगभग 1300 रू. खर्च होते हैं।

हमारी अधिकांश आबादी आज भी गांवों में निवास करती है व भोजन पकाने के लिए पारम्परिक मिट्टी के चूल्हों का इस्तेमाल करती हैं जिससे ईंधन की बर्बादी के साथ—साथ समय व श्रम की हानि व पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। पर्यावरण संरक्षण आज की महती आवश्यकता है इस बात को ध्यान में रखते हुए हमें पारम्परिक चूल्हों के परिष्कृत रूप उन्नत चूल्हों को काम में लने के लिए विभिन्न प्रसार गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं को प्रेरित करना चाहिये। यदि इस तरह सघन प्रयास किया जाये तो निश्चित ही हमारे देश में एक ओर क्रान्ति आयेगी जो पर्यावरणीय मित्र होगी।

गाजर का हलवा

नव वर्ष के मोके पर मेहमान तो सभी के घर आऐंगे ही, उनके खाने के लिये कुछ बनाया जाय, आजकल गाजर का मौसम है, तो क्यों न गाजर का हलवा) बना लिया जाय मेहमानों के लिये.

आइये गाजर का हलवा बनाना शुरू करते हैं.

आवश्यक सामग्री गाजर -1 कि. ग्राम (8-10 गाजर मध्यम आकार की)

☐चीनी-250 ग्राम (1 1/4 कप),मावा -250 ग्राम (1 कप),दूध - 1/2 - 1 कपदेशी घी - एक टेबल स्पून

☐कशमिश - एक टेबल स्पून (डठल तोड़ लीजिये)काजू - 12-15 ग्राम (4-5 टुकड़े करते हुये काट लीजिये)

☐नारियल- एक टेबल स्पून (कद्दूकस किया हुआ) (यदि आप चाहें)छोटी इलाइची- 5-6 (छील कर पीस लीजिये)

विधि ....गाजर का हलवा बनाने के लिये, आप एक किलो लाल लाल गाजर बाजार से ले लीजिये. गाजर को छील कर अच्छी तरह धो लीजिये और इन्हैं कद्दू कस कर लीजिये.

मावा को एक कढाई में डाल कर धीमी आग पर भून लीजिये. भुना हुआ मावा एक प्याले में डाल कर रख लीजिये.

कद्दूकस किये हुये गाजर, कढाई में डाल कर गैस पर रखिये, दूध डालकर मिला दीजिये, गाजर को नरम होने तक पकने दीजिये. अब गाजर में चीनी मिला दीजिये, थोडी थोडी देर में चलाते रहैं, गाजर का रस निकलने लगेगा, आप उसे हर 2 मिनिट के बाद चलाते रहैं, सारा गाजर का रस जलने तक गाजर को पका लीजिये.

पकी गाजरों में घी डाल कर भून लीजिये, किशमिश, काजू और मावा मिला दीजिये. हलवे को चलाते हुये 2-3 मिनिट तक पकायें, गैस बन्द कर दें और पीसी हुई इलाइची मिला दीजिये. आपका गाजर का हलवा तैयार है.

गाजर के हलवे (Carrot Halwa) को प्याले में निकाल लीजिये .कद्दूकस किये हुये नारियल को उसके ऊपर डालकर सजा दीजिये. गरमा गरम या ठंडा गाजर का हलवा (Carrot Pudding) परोसिये और खाइये. बचा हुआ गाजर का हलवा ठंडा होने के बाद कन्टेनर में भर कर, फ्रिज में रख लीजिये और 7 दिन तक रोजाना खाइये.

सुझावः गाजर का हलवा में सूखे मेवा आप अपने पसन्द के अनुसार कम ज्यादा कर सकते हैं, जो मेवे आपको पसन्द हो वो डाल सकते हैं और जो नहीं पसन्द हों उन्हैं आप हटा सकते हैं.

सरोज मुनि कपिल

महक बिखेरेगा तेजपत्ता

विकासनगर: कुमाऊं मंडल के बाद अब गढ़वाल मंडल में भी तेजपत्ता का उत्पादन बृहद पैमाने पर किया जाएगा। सुगंध पौध केंद्र सेलाकुई के वैज्ञानिकों ने पछवादून में तेजपत्ता के पौधे बड़े पैमाने पर काश्तकारों को लगाने को दिए हैं। तेजपत्ता के उत्पादन से काश्तकार अपनी बंजर भूमि को भी उपयोगी बना सकते हैं। सुगंध पौध केंद्र की ओर से किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने और बंजर पड़ी भूमि को भी उपयोग में लाने के लिए कई तरह के प्रयोग किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयोगों के तहत पौध केंद्र ने कुमाऊं मंडल की तर्ज पर गढ़वाल मंडल में भी तेजपत्ता का उत्पादन शुरू कर दिया है। पछवादून के धर्मावाला, शेरपुर, आदूवाला, रुद्रपुर के साथ ही कालसी ब्लॉक में काश्तकारों ने तेजपत्ता के पेड़ बड़े पैमाने पर लगाए हैं। सगंध पौध केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. राकेश यादव के अनुसार तेजपत्ता हल्की नमी और थोड़ा ठंडी जलवायु में होने वाला तेजपत्ता जगह कम घेरता है और जंगली व पालतू जानवरों से भी इसे कोई नुकसान नहीं होता है।

उत्तराखण्ड के किसानों की सरसों की खेती में रुची

सरसों अनुसंधान निदेषालय में लिया 3 दिवसीय प्रशिक्षण

धान एवं गन्ने की परम्परागत खेती करने वाले उत्तराखण्ड के हरिद्वार जिले के किसानों का सरसों की खेती में रूझान बढ रहा है। किसानों की रुची को देखते हुए सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर द्वारा आत्मा परियोजना कृषि विभाग, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के सहयोग से चयनित किसानों हेतु 3 दिवसीय किसान प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए निदेशालय के निदेषक डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि सरसों की वैज्ञानिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद शुरूआत में गन्ने के साथ–साथ सरसों की भी खेती की जा सकती है। उसके बाद किसान अपनी परिस्थिति, संसाधनों आदि के अनुरूप उपयुक्त किस्मों का चुनाव करके सरसों की पूर्ण खेती कर सकता है। किसान प्रशिक्षण के समापन अवसर पर उपनिदेशक (कृषि), भरतपुर के श्री देशराज सिंह ने कहा कि अधिक उपज प्राप्त करने के लिए भूमि की उर्वरा शक्ति को बढायें । इसके लिए मिट्टी की जांच करवाकर उर्वरकों का प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में कृशि उत्पादों की गुणवत्ता बढाने की जरूरत है, इसके लिए जैविक खेती की तरफ ध्यान देना इस अवसर पर कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र के पूर्व प्रभारी डॉ. सी.एल. देशवीर ने किसानों से वैज्ञानिक अनुसंधानों को अपनाकर खेती करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि समय के साथ किसानों को अपनी खेती में बदलाव करना चाहिए ताकि उन्हे अपनी उपज का अधिकतम लाभ मिल सके। इस अवसर पर वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षण समन्वयक डॉ अशोक कुमार शर्मा ने बताया कि कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य धान एवं गन्ने की परम्परागत खेती करनें वाले किसानों को सरसों की वैज्ञानिक खेती अपनाने के लिये प्रोत्साहित करना था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के हरिद्वार जिले के 28 प्रगतिशील किसानों एवं 2 अधिकारियों ने भाग लिया। सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अशोक कुमार शर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का संपूर्ण संचालन किया ।

कृषि समस्याओ पर चर्चा ...एस.आर.पारीक

कृषि प्रबन्ध संस्थान दुर्गापुरा मे आर. आर. मेहेता की अध्यक्षता मे कृषि समस्याओ पर चर्चा के साथ सभी सद्स्यो ने अपने विचार व्यक्त किये कार्यक्रम का संचालन एस. आर. पारीक ने किया विशेष अतिथि मीठा लाल मेहेता ने अपने विचारो से सद्स्यो का उत्साहवर्धन किया

किसानों भूख हड़ताल दूसरे दिन भी जारी

पटियाला भारतीय किसान यूनियन एकता डकौंदा के किसान दर्शन सिंह शेखपुरा के वित्त सचिव के नेतृत्व में 21 किसानों ने मंगलवार को दूसरे दिन भी भूख हड़ताल जारी रखी।

मंगलवार मिनी सचिवालय के बाहर भारतीय किसान यूनियन एकता डकौंदा के नेतृत्व में जिले भर के किसानों ने मिनी सचिवालय के बाहर प्रदर्शन किया। पंजाब भारतीय किसान यूनियन एकता डकौंदा के प्रधान डॉ. दर्शनपाल, उप प्रधान करनैल सिंह लंग, गुरमेल सिंह चरासों, महासचिव सतवंत सिंह वजीरपुर और जिला वित्त सचिव दर्शन सिंह शेखपुर और भादसों, सनौर , पटियाला, पातड़ां और समाना ब्लॉक के प्रधान गुरबचन सिंह कनसूहा, सुखविंदर सिंह तुलेबाल, जंग सिंह भटेरी, सीता सिंह हरियालू खुर्द, गुरमेल सिंह और मुख्तियार सिंह भूलर ने पंजाब सरकार को किसान विरोधी बताते हुए कहा कि इस सरकार के दो चेहरे हैं। जब दूसरे राज्यों में सिख किसानों को जमीन से बेदखल किया जाता है तो बादल सरकार वहां पहुंच जाती है जैसा कि अभी गुजरात में हुआ, लेकिन बादल सरकार का असली चेहरा तो ये है कि वे अपने ही राजय में सिख किसानों को जमीन से बेदखल करने पर उतारू है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं को करेंगे सुदृढ़ : कौल

मंडी : प्रदेश में चालू वित्ता वर्ष के दौरान शिक्षा पर 3836 करोड़ रुपये की राशि खर्च की जा रही है। यह जानकारी स्वास्थ्य व राजस्व मंत्री कौल सिंह ठाकुर ने मंगलवार को नाचन विधानसभा क्षेत्र के रजवाड़ी में स्वास्थ्य केंद्र भवन का शिलान्यास, पंचायत घर व राजीव गांधी सेवा केंद्र रजवाड़ी के भवन का लोकार्पण करने के उपरांत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला रजवाड़ी के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में कही। उन्होंने कहा कि शिक्षा से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है तथा शिक्षा क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने अध्यापकों का आह्वान किया कि वे विद्याथिर्यों को गुणवता शिक्षा प्रदान करने के साथ अनुशासन के बारे में भी शिक्षित करें। 6-12 वर्ष के बच्चों को सरकार द्वारा सप्ताह में एक बार आयरन की गोलिया भी उपलब्ध करवाई जा रही है। सरकार प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं को सुदृढ़ कर रही है

किसान लावारिस पशुओं से परेशान

बरोट : चौहार घाटी में आजकल लावारिस पशुओं व कुत्तों के आंतक से लोग सहम गए हैं। लावारिस पशु किसानों की खेतों में बीजी गई जो की फसल को रात के अंधेरे का फायदा उठाकर चट कर रहे हैं।किसानों द्वारा अपने पशुओं के लिए इकट्ठा किए गए घास को भी लावारिस पशु रात के समय खा रहे हैं। फसल बचाने के लिए किसानों को खेतों में पहरा देना पड़ रहा है। घाटी में लगभग एक सप्ताह से लावारिस कुत्तों का आतंक फैला हुआ है। लावारिस कुत्तों के आंतक से सहमे लोग अकेले में इधर-उधर आने-जाने से कतरा रहे हैं।

विज्ञापन हेतु संपर्क करें

ममता (मुम्बई) 08898600347
गौतम राज सारस्वत (भायंदर)09987030599
महेन्द्र दधीच (जयपुर)09462392863
जयदीप माथुर (गुड़गाँव) 09928960900
दिलबाग सिंह बडेसरा (गुड़गाँव)09810026778
तारा मोहन (दिल्ली) 09582444313

पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने निकले इनेलो वर्कर

हिसार. पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा बचाने के संदेश को लेकर इनेलो कार्यकर्ताओं ने बुधवार को शहर में साइकिल रैली निकाली। पार्टी के जिला अध्यक्ष उमेद सिंह लोहान के नेतृत्व में रैली ने शहर का दौरा किया। सांसद रणबीर गंगवा ने तोशाम रोड स्थित पार्टी जिला मुख्यालय से रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली का आयोजन पूर्व उप प्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल के जन्म शताब्दी वर्ष पर जन चेतना महा अभियान की प्रथम वर्षगांठ पर किया गया। सांसद गंगवा ने रैली को रवाना करने से पहले अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान भौतिकवादी युग और तेजी से बदलते परिवेश में पर्यावरण को बचाना अति आवश्यक है। इनेलो हमेशा से राजनीति के साथ साथ ऐसे सामाजिक कार्यों में भी अग्रणी रही है।

किसानो के बीच सृष्टि एग्रो लोकप्रियता के नये पायदान चढ.रहा है!

सांगानेर के रहने वाले किसान शंकर ने लेखो से मिलने वाले लाभ के बारे मे जानकारी दी

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com